ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

# देवपुत्र

कार्तिक २०७८ नवम्बर २०२१

₹२०

कविता

# दीवाली का पर्व निराला

– डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

पाँच दिनों की खुशियों वाला।
दीवाली का पर्व निराला।।
पहले दिन होती धनतेरस–
खूब खरीदें जाते बरतन।
धन्वन्तरी वैद्य की पूजा,
करके मिलता है निरोग तन।।
बाजारों में होती रौनक–
दूकानों पर होते लाला।।
अगले दिन छोटी दीवाली,
कहलाती है नर्क चतुर्दश।
बाल–कृष्ण ने इस दिन मारा
नरकासुर–सा महाराक्षस।।
साफ–सफाई करें शाम को,
नाली पर हो दीपक आला।।
दिवस तीसरे दीप मालिका–
है लक्ष्मी–गणेश का पूजन।
दीप खुशी के, मेल–जोल के,
खूब सजाएँ, द्वारे–आँगन।।
खील–खिलौने और मिठाई।
अर्पित कर फूलों की माला।।
चौथे दिन गोवर्द्धन पूजा,
कान्हा ने ब्रज की रक्षाकर।
किया स्वयं देवत्व प्रतिष्ठित,
खुशी मनाते सब नारी–नर।।
लोक पर्व अद्‌भुत यह भाई।
अन्नकूट त्यौहार निराला।।
भैया–दूज पाँचवें दिन है,
बहिना घर जो खाते खाना।
मोक्ष सदा उनको मिलता है–
पड़ता नहीं यम पुरी जाना।।
बहिनें, भाई को टीकाकर।
देतीं मधुर प्रसाद निराला।।

– हरदोई (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
# देवपुत्र
(विद्या भारती से सम्बद्ध)

कार्तिक २०७८ ▪ वर्ष ४२
नवम्बर २०२१ ▪ अंक ५

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

**मूल्य**

| | | |
|---|---|---|
| एक अंक | : | २० रुपये |
| वार्षिक | : | १८० रुपये |
| त्रैवार्षिक | : | ५०० रुपये |
| पंचवार्षिक | : | ७५० रुपये |
| पन्द्रहवर्षीय | : | १४०० रुपये |
| सामूहिक वार्षिक | : | १३० रुपये |

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

**संपर्क**
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

## अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

दीपावली की बात हो और दीये की चर्चा भी न हो तो बड़ा अधूरा-सा लगता है। सदियों से दीपक मानव समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। अंधकार के विरुद्ध लड़ाई में इस दीपक रूपी नन्हें **प्रकाश वीर** ने सदैव मनुष्यों का साथ निभाया है। इतना ही नहीं तो अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण यह सभी देवी-देवताओं का भी इतना प्रिय पात्र है कि इसकी उपस्थिति के बिना उनकी पूजा ही पूरी नहीं होती।

दीपक प्रकाश तो देता ही है लेकिन आप ध्यान देंगे तो आपको दीपक में और भी कई ऐसे गुण दिखाई देंगे जो जीवन को जगमग कर सकते हैं। मिट्टी जैसे साधारण समझे जाने वाले पदार्थ से दीपक बनने के लिए वह कड़ी परीक्षाओं और संस्कारों के दौर से गुजरता है। कुम्हार मिट्टी को कूट-कूट कर उसकी कठोरता मिटाता है फिर उसकी शुष्कता मिटाने हेतु पानी डालकर रौंदता है। इस तरह तैयार मिट्टी, चाक पर पूरे समर्पण के साथ कुम्हार रूपी गुरू के हाथों दीपक बनती है। फिर धैर्य की धूप में सूखना सहनशीलता की भट्टी में पकना होता है। तब वह बनता है दीपक। तब भी वह अकेला कुछ नहीं कर सकता। वह बाती का सहयोग लेता है। अपने अन्दर स्नेह रूपी तैल सहेजता है, फिर प्रेरणा रूपी माचिस की तीली से जल उठता है, तब प्रकाश करने योग्य बनता है।

प्रकाशित होने पर भी उसे पूजा घर में रखो या दरवाजे पर वह कभी आपत्ति नहीं करता। उसका ध्येय है जहाँ भी आवश्यकता हो केवल और केवल प्रकाश फैलाना। परिस्थितियों की हवा में वह अकड़ता नहीं हवा की दिशा में लौ झुकती है और विपरीतता समाप्त होते ही पुन: उठ खड़ी होती है। जीवन के अंतिम क्षणों तक बिना विश्राम जलते रहने का उसका प्रयत्न रहता है।

एक बात और वह कभी भी अपनी ज्योति दूसरे दीपकों को बाँटने में कंजूसी नहीं करता। उसे तो यह भी चिंता नहीं कि मेरे जैसे कई दीप हो जाएँगे तो मेरा महत्व कम न हो जाए। उल्टे वह तो अपने जैसे अनेक दीपों को जलाकर दीपावली का त्यौहार मनाता है, अपने लिए भी सबके लिए भी।

तो आप भी अपना जीवन बनाना चाहेंगे न दीपक की तरह।

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

# ॥ अनुक्रमणिका ॥

## कहानी


- दीये मिट्टी के -नीरज कुमार मिश्रा ०५
- बम पटाखे फुस्स -विजय जी खत्री १२
- अब कैसे जाती लक्ष्मी -दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' २४
- असली पूजा -डॉ. सेवा नंदवाल ३०
- बड़ी खुशी -हरिन्दर सिंह गोगना ४२


## छोटी कहानी


- पर्यावरण मित्र दीवाली -प्रवीण कुमार २०
- दीवाली पर दादी का प्रण -डॉ. देशबंधु शाहजहाँपुरी ३८


## आलेख


- सुवर्ण प्राशन -डॉ. अनुपम ताम्रकार १६


## प्रसंग


- राष्ट्र से बड़ा कोई नहीं -सांवलाराम नामा ४४


## जानकारी


- ऐसे प्रारंभ हुआ दीपोत्सव -राजेश गुजर १०
- होनहार बिरवान..... -डॉ. हनुमानप्रसाद उत्तम ३६


## लघुकथा


- स्वार्थी सोच का परिणाम -मीरा जैन १५
- दीया और बाती -मीरा जैन १५


## कविता


- दीवाली का पर्व निराला -डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ०२
- जगमग दीप जले -डॉ. मो. साजिद खान ०८
- नन्हें दीपक -डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल' १८
- वर्द्धमान से महावीर -राजकुमार जैन 'राजन' २१
- रहते हैं सदा निरोग -डॉ. दिनेश पाठक 'शशि' ४८
- हम बच्चे -सूर्यकुमार पाण्डेय ४९
- आओ दीपावली मनाएँ -अरविन्द कुमार साहू ५१


## स्तंभ


- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक २२
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' २६
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी २९
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल ३२
- विषय एक कल्पना अनेक : बच्चे
  - हम हैं सच्चे हिन्दुस्थानी -डॉ. अशोक कुमार गुप्त ४०
  - बच्चे -पं. गिरिमोहन गुरु ४०
  - बच्चे अजब गजब -अंजली शर्मा ४१
- पुस्तक परिचय ४६
- सरल विज्ञान -संकेत गोस्वामी ४७
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान ४८
- छ: अंगुल मुस्कान ४९


## बाल प्रस्तुति


- मिठाइयों के मीठे बोल -जान्हवी सोलट ३७


## चित्रकथा


- दीवाली में होली -देवांशु वत्स ०९
- बड़ाम -संकेत गोस्वामी १९
- फटाफट सर -देवांशु वत्स ४५


## बौद्धिक क्रीडा


- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स २३
- व्यंग्य चित्र -संकेत गोस्वामी ३५
- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी ५०

**क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!**

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

# दीये मिट्टी के

– नीरज कुमार मिश्रा

''तुम्हारी तो नोक ही टूट गयी हैं... और अब तो तुम्हारी रंगत भी अच्छी नहीं रही ''एक दीये ने दूसरे से कहा।

दूसरा दीया बोला– ''हमारे तो परेशानी के दिन चल ही रहे हैं.... और तुम्हें तो पता ही है अब हमें खरीदता ही कौन हैं?''

तभी पहला दीया बोल पड़ा– ''हाँ भाई! चाइनीज झालरों और रंगबिरंगे बल्बों ने तो हमारी जिंदगी ही समाप्त कर दी है.... हमें कोई नहीं खरीदता और तभी तो हम पिछले दो वर्षों से रामू कुम्हार के घर के कोने में पड़े हुए हैं।''

''हमारे कुछ साथियों को तो खरीदा गया था पर वे भी बेचारे जिस घर में गए उस घर के बच्चों को मोबाईल में गेम खेलने से ही फुरसत नहीं थी।

.....फिर क्या था वे बेचारे ऐसे ही रह गए... न उनमें तेल भरा गया और न ही उन्हें जलाया गया गया।'' उन दोनों दीयों की बातचीत में अब तीसरा दीया भी शामिल हो गया था।

बाकी आसपास पड़े दीये भी बारीबारी से अपनी बदहाली पर दु:ख प्रकट करते रहे और उन दिनों को याद करते रहे जब रामू कुम्हार उन्हें कितने जतन से बनाता था और जब वे आग में से खरे होकर निकलते थे तो वह एक–एक दीये को अपने अंगौछे से पोछता और एक बड़े से टोकरे में सजाकर गाँव में लगने वाले बाजार में जाता था, शाम तक देखते ही देखते सारे दीये बिक जाते और अगल–अलग घरों में पहुँच जाते और घर के लोग उनमें तेल भरकर उन्हें जलाते।

जहाँ एक ओर दीपावली की पूजा से लोगों का मन प्रसन्न होता वहीं दूसरी ओर दीये की फैली हुई रोशनी से पूरा वातावरण ही जगमगा उठता था और लोग इन प्रकाश फैलाते दीयों को अपने सुख और वैभव का प्रतीक मानते और यह भी मानते कि इन दीयों को जलाने से लक्ष्मी का आगमन होता है इसी भावना से इन दीयों को बहुत ही आदर और सम्मान की दृष्टि से भी देखा जाता था पर अब लोगों की बदलती सोच और बढ़ती आधुनिकता के चक्कर में लोग अपनी मान्यताएँ और सिद्धांत ही भूलने लगे हैं।

सभी दीये एक–दूसरे के पास आकर रोने लगे और तेज आवाज में शोर करने लगे– ''इससे तो अच्छा होता कि रामू कुम्हार हमें तोड़ ही दे... इस तरह दीया बनकर खाली पड़े रहने से तो कोई लाभ नहीं।''

दीयों के रोने की आवाज तेज होने लगी तो उनका शोर सुनकर अमाया की आँख खुल गई।

''तो क्या मैं सपना देख रही थी!!! ओह!! यह तो बड़ा अजीब सपना था... पर.... वे दीये तो सच में बहुत परेशान लग रहे थे।''

अमाया को याद आया कि जब वह साइकिल से शाला जाती है तो रास्ते में रामू कुम्हार का घर पड़ता है जिसके घर के बरामदे के एक कोने में पुराने और बदरंग हो चुके मिट्टी के दीयों का एक ढ़ेर लगा हुआ दिखता है।

नवीं कक्षा में पढ़ने वाली अमाया के लिए दीयों के दु:ख को जानने का यह पहला अवसर था और यह जानकर अमाया स्वयं भी बहुत दुखी हो गई थी।

शाला जाते समय अमाया ने उन दीयों पर आज फिर एक दृष्टि डाली एक दूसरे के ऊपर लदे हुए दीये जिनमें से कुछ टूट भी चुके थे जिन्हें देखकर उसे लगा कि वे सारे दीये वास्तव में दुखी और सुस्त थे। उन्हें देखकर अमाया भी बहुत दुखी हो गई।

उस घर के अंदर से किसी बच्चे की आवाज

आ रही थी जो अपने पिता से कुछ कह रहा था– ''पिताजी! आज जब बाजार से आना तो हमारे लिए कुछ मिठाई और फल लाना।''

''अरे मेरे बेटे! कहाँ से लाऊँगा यह सब तुम लोगों को पेटभर भोजन तो नहीं करा पा रहा हूँ और वैसे भी अब... मिट्टी के दीये और मिट्टी के खिलौने कोई नहीं खरीदता... अब तो सब बिजली वाली विदेशी झालर जलाते हैं।

पहले तो हमारे बनाए घड़े भी अच्छी कीमत पर बिक जाते थे पर अब तो वे भी नहीं बिकते... पर आज यदि दीये बिक गए तो मैं अवश्य तुम्हारे लिए फल और मिठाईयाँ लाऊँगा।'' रामू कुम्हार अपने बेटे से कह रहा था।

उन दोनों की बातें अमाया ने सुनी तो वह भी परेशान हो गई।

जब अमाया शाला पहुँची तो उसके चेहरे पर परेशानी स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

शाला में उसे देखकर उसकी चहेती शिक्षिका अमिता ने उसे पास बुलाकर उसकी सुस्ती का कारण पूछा। अमाया ने सपने से लेकर दीयों और रामू चाचा की बदहाली की सारी बात शिक्षिका को बता दी और अमाया ने अपनी शिक्षिका से यह भी पूछा कि– ''आखिरकार जब दीपावली प्रकाश का त्यौहार है तो हम मिट्टी से बने दीये क्यों नहीं जलाते हैं और केवल बल्बों और झालरों की रोशनी पर ही क्यों निर्भर रहते हैं?''

भोजनावकाश में शिक्षिका अमिता ने अमाया को अपने पास बुलाया और ढ़ेर सारी बातें की और बातों–बातों में उन्होंने अमाया को यह भी बताया दीपावली क्यों मनाई जाती है? और दीपावली मनाने का सही तरीका क्या है?

इन सबके अलावा अमाया ने और भी बहुत सी चीजें अपनी अमिता जी से पूछी जिनका उत्तर उन्होंने बड़ी ही सहजता से उसे दिया। दो दिन बाद ही अमाया का जन्मदिन था, उसके माता–पिता और बड़ा भाई रिदम उसे इस अवसर पर बड़े–बड़े उपहार, मिठाई और चॉकलेट आदि देते थे और वे लोग बाहर जाकर भी आनंद लेते थे।

''माँ इस बार में आप लोगों से जन्मदिन पर कोई भी उपहार नहीं लूँगी और न ही घूमने के लिए बाहर जाऊँगी।'' अमाया ने माँ से कहा तो माँ उसे आश्चर्य भरी दृष्टि से देखने लगी, उनकी शंका का निराकरण अमाया ने तुरंत ही कर दिया।

''माँ आप लोग चॉकलेट, उपहार और चाट पर जो पैसे व्यय करते हो उन्हें इस प्रकार व्यर्थ चीजों पर व्यय नहीं करके वह पैसे मुझे दे देना।''

''अच्छा तो मेरी बेटी बचत करेगी।'' माँ ने कहा तो अमाया केवल मुस्कुराकर रह गई।

जन्मदिन के दिन सभी लोगों ने अमाया को उसकी इच्छा के अनुसार पैसे ही दिए सब मिलकर लगभग नौ सौ रुपये हो गए थे, अमाया के दिमाग में कोई योजना चल रही थी और उसने योजना में रिदम को भी शामिल कर लिया था।

दीपावली में लगभग एक सप्ताह था, रिदम और अमाया दोनों एक साथ कुम्हार रामू चाचा के पास

पहुँचे और उसके हाथ में सात सौ रुपये देते हुए बोले–

''चाचा हमें इन पैसों के बदले में मिट्टी के दीये दे दो।'' रिदम ने कहा तो रामू कुम्हार तो हैरत में पड़ गए और उन्होंने कहा कि सात सौ रुपयों में तो एक ठेलिया भरकर दीये आ जाएंगे और अभी तो मेरे पास इतने दीये तैयार भी नहीं है।

''तो कोई बात नहीं है चाचा! आप आराम से और दीये तैयार कर लो और फिर हम उन्हें लेने आ जाएँगे।'' रिदम ने कहा तो रामू ने उनसे कहा कि– ''वह दीये बनते ही ठेलिया में भरकर स्वयं ही सारे दीये उनके बताए गए पते पर पहुँचा देगा।''

पाँच दिन के बाद रामू दो ठेलिया में भरकर दीये ले आया, एक साथ इतने दीये रिदम और अमाया ने कभी नहीं देखे थे। ''पर चाचा... इनमें तो सारे नए दीये हैं.. हमें तो वह दीये भी चाहिए जो आपके घर के कोने में पड़े हैं।''

''पर बच्चों वे तो पुराने व टूटे–फूटे हैं।''

''पर हमें वे भी चाहिए।''

उनकी बात सुनकर रामू चाचा वे कोने में पड़े दीये भी ले आये और रिदम व अमाया को दे दिए।

अभी भी दीपावली में दो दिन शेष थे। पर रिदम और अमाया अपने घर के सामने वाले मैदान में उन दीयों को सजाने लगे, उन्हें ऐसा करते देख मोहल्ले के और बच्चे भी दीये सजाने के लिए आ गए अभी तक किसी को समझ नहीं आ रहा था कि यह सब क्यों हो रहा है?

पूरी मैदान में एक विशेष आकृति में दीयों को सजा दिया गया था और अब बारी उनमें सरसों का तेल भरने की थी, रामू चाचा को पैसे देने के बाद जो पैसे बचे थे उनसे सरसों का तेल आया था जो आज दीयों को भरने के काम में आ रहा था। इस काम में अब रिदम और अमाया के माता–पिता भी आ गए और उन्होंने दीयों को जलाना प्रारम्भ कर दिया।

एक के बाद एक दीये जलाना भी सरल काम तो था नहीं पर सभी लोग लगन से दीये जलाते रहे, अभी आधे दीपक ही जले थे कि अचानक मोहल्ले की लाईट चली गई, करीब आधे घण्टे तक लाईट नहीं आई तो मोहल्ले के लोग घरों से बाहर निकलने लगे।

बाहर आकर मोहल्ले वालों ने सामने वाले मैदान में देखा तो उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रही, उन्होंने देखा कि मैदान में सैकड़ों दीये जल रहे हैं जिन्हें भारत के मानचित्र के आकार में रखा गया है, ऐसा लग रहा था कि भारत का मानचित्र चारों ओर से प्रकाश का एकमात्र स्रोत बना हुआ है।

उत्सुकतावश लोग मैदान और दीयों के आसपास इकत्र होने लगे यही समय था जब अमाया ने अपने हाथ में माइक ले लिया और मोहल्ले वालों को सम्बोधित करने लगी–

''जैसा कि आप सबको पता है कि दीपक जलाना हमारी संस्कृति है और हम इसे भूलकर चाइनीज उत्पाद और रंगबिरंगे बल्ब जलाकर प्रसन्न हो लेते हैं क्योंकि ऐसा करना थोड़ा सा सरल प्रतीत होता है।

पर जरा उन लोगों के बारे में विचार करिए तो जिनका घर इन्हीं दीयों को बनाने पर आधारित है

शांति और वैभव आता है... और अभी लाईट चली गई तो अँधेरा हो गया है ऐसे में भी यह दीये कितना प्रकाश किए हुए हैं...

आज हम अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं जो कि ठीक नहीं है... हमें अपनी परम्पराओं को नहीं भूलना चाहिए और विदेशी उत्पादों की बजाय स्वदेशी मिट्टी के बने दीपक ही जलाने चाहिए और हम मँहगे पटाखे जलाते हैं जिससे ध्वनि प्रदूषण तो होता ही है बल्कि वायु प्रदूषण भी फैलता है।

अत: हम पटाखों और विदेशी झालरों पर पैसा फूँकने की अपेक्षा दीये जलाए जिससे गरीब कुम्हारों की भी सहायता हो सकेगी और देश का पैसा भी देश में ही रहेगा।''

अमाया की बात सुनते ही वहाँ खड़े लोगों के हाथ स्वत: ही तालियाँ बजाने लगे और यही वह समय था जब घरों में लाईट भी आ गई थी, मोहल्ले के लोगों को अमाया की बात अब समझ आ गई थी।

दो दिन बाद जब दीपावली आई तो रिदम और अमाया ने देखा कि लोग अपने घरों में मिट्टी के दीये ही जला रहे हैं और किसी ने भी विदेशी झालरों को घर में नहीं लगाया है।

घर की मुँडेरों पर दीये, छतों पर दीयों की कतार झिलमिला रही थी तो बालकनी की दीवारों पर भी दीये जलकर प्रकाश फैला रहे थे।

अमाया और रिदम ने अपने माँ–पिताजी को आकर धन्यवाद कहा क्योंकि बिना उनके अमाया अपना संदेश मोहल्ले वालों तक नहीं पहुँचा सकती थी और फिर पिताजी ही ने तो अमाया और रिदम का रामू चाचा की सहायता करने की योजना सुनकर मोहल्ले के बिजली वाले दादा से एक विशेष समय पर बिजली का कनेक्शन काटने को कहा था।

माता और पिता की आँखों में दीपों की झिलमिलाहट साफ देखी जा सकती थी।

''चलो भैया! हम भी दीये जलाएँ।'' अमाया ने कहा तो रिदम दीये उठाकर ले आया।

ये वही पुराने वाले दीये थे जो रामू चाचा ने दुखी होकर घर के कोने में रख दिए थे।

रिदम और अमाया ने उन पुराने दीयों को तेल से भरकर उन्हें जला दिया था, और ऐसा लग रहा था कि वे सारे दीयें टिमटिमाते हुए रिदम और अमाया को धन्यवाद कह रहे थे।

भले ही यह दीये पुराने थे पर इनमें प्रकाश तो नया ही था और इनका नया प्रकाश समाज को भी एक नई दिशा दिखा रहा था।

आज इस मोहल्ले में ही दीपावली नहीं मन रही थी बल्कि रामू चाचा के घर में भी दीपावली मन रही थी, मिट्टी के दीयों, फल और मिठाईयों के साथ।

**– पलिया कलां**
**खीरी (उ. प्र.)**

कविता

## जगमग दीप जले

**– डॉ. मो. साजिद खान**

**जगमग दीप जले, लगते बहुत भले।**
**उजियारे से सारे, हैं घरबार धुले।**
**दुर्दम अंधियारे के, टूटे आज किले।**
**फुलझड़ियों के झलमल, अनगिन फूल खिले।**
**उजियारा अंबर से, मिलता आज गले।**
**जीवन में सपनों के, सारे रंग घुले।**

**– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)**

# दिवाली में होली

चित्रकथा: देवांशु वत्स

# ऐसे प्रारंभ हुआ दीपोत्सव

– राजेश गुजर

दीपावली पर्व आज हम जिस रूप में मनाते हैं वह सदियों की सांस्कृतिक यात्रा का परिणाम है। यह पर्व लक्ष्मीजी की आराधना के रूप में चाणक्य के दौर के कौमुदी महोत्सव का उत्तराधिकारी है, वहीं प्राचीन तांत्रिक पूजा की झलक भी इसमें है।

जानिए कब, कौन सी परंपरा इस पर्व से जुड़ती गई और पहली बार कब प्रामाणिक ऐतिहासिक किताबों एवं ग्रंथों में इनका उल्लेख मिलता है।

* इस दिन भगवान श्रीराम १४ वर्षों के वनवास और रावणवध के बाद अयोध्या लौटे थे, उनके आगमन पर प्रजा ने स्वागत के लिए दीये जलाए थे।

* इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध किया था।

* इस दिन पाण्डव बारह वर्षों के वनवास के बाद अपनी राजधानी हस्तिनापुर लौटे थे।

* ढाई हजार वर्ष पहले पावानगरी में भगवान महावीर ने इसी दिन निर्वाण प्राप्त किया था।

* १६१९ में सिक्खों के छठे गुरु हरगोविंद सिंह दीपावली के दिन ही १५ वर्षों के कारावास से मुक्त हुए थे। उनके स्वागत पर दीप जलाए गए थे।

* लक्ष्मी पूजा का उल्लेख ऋग्वेद के श्रीसूक्त में है, लक्ष्मी पूजा की कथा समुद्र मंथन से जुड़ी है इसका उल्लेख महाभारत में भी मिलता है।

* उपनिषदों में लक्ष्मी पूजा का वर्णन है,

* चंद्रगुप्त तथा चाणक्य के समय पाटलिपुत्र में कौमुदी नामक महोत्सव बड़े स्तर पर मनाया जाता था, इस बीच जलाशयों के किनारे और नौकाओं में दीपक जलाए जाते थे। गुप्तकालीन ग्रंथों के अनुसार यह शरद पर्व पूर्णिमा पर मनाया जाता था। तब दीपावली उत्सव पूर्णिमा से अमावस्या तक का पर्व था।

* **'नीलमत पुराणम्'** किताब में इस त्यौहार के साथ लोगों द्वारा घर और बाहर उजाला करने की

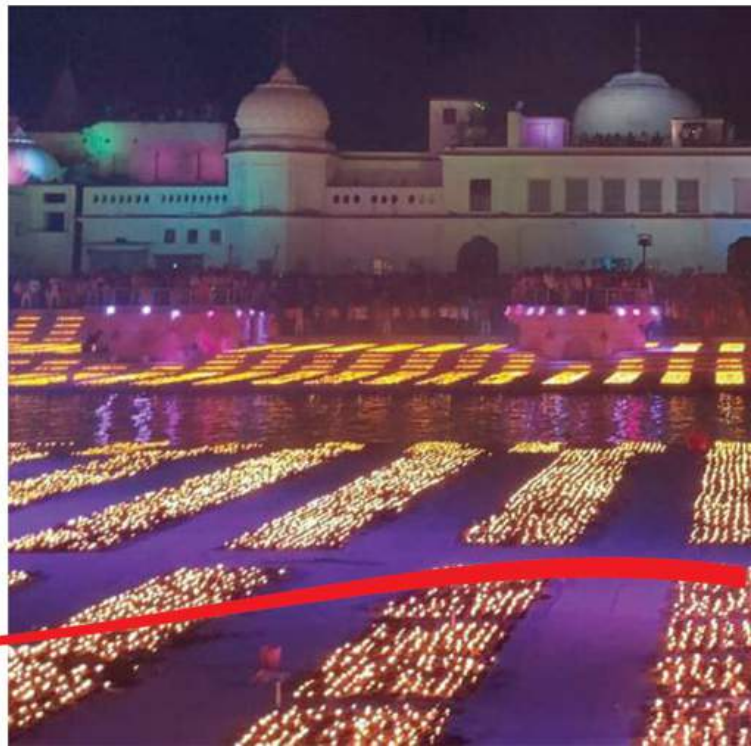

बात सामने आती है। इसमें वंदनवार से सजावट, रिश्तेदारों, परिजनों के साथ भोजन करने व नए कपड़े, सुंदर गहने पहनने का भी वर्णन है।

❊ सोमदेव सूरि ने अपनी रचना **'यशस्तिलकचंपू'** में घरों की रंगाई-पुताई की बात कही है। इसमें उल्लेख है कि घर की मुण्डेर को रोशनी से सजाया जाने लगा था यह सब महानवमी के बाद होता था। ऐसा वर्षा ऋतु की समाप्ति के बाद स्वच्छता बनाए रखने के लिए किया जाने लगा।

❊ ५००० वर्ष पहले पुरानी मोहन-जोदड़ो सभ्यता की खुदाई में दीपक रखने की जगह और मिट्टी की मूर्ति के साथ दीपदान मिले हैं। इतिहासकार इसे दीपोत्सव से जोड़ते हैं। साथ ही वनस्पति देवी की पूजा के साक्ष्य भी मिले हैं।

❊ प्राचीन देवगिरी (वर्तमान में दौलताबाद, महाराष्ट्र) के राजा महादेव के प्रधानमंत्री हेमाद्रि ने अपनी रचना **चतुर्वर्गचिन्तामणि** में यमद्वितीया का वर्णन किया है। इस दिन यम ने अपनी बहन यमुना के घर भोजन किया था।

❊ भारत में खुशी और उत्सव के अवसर पर पटाखे चलाने की परंपरा पाँच-छः सौ वर्ष पुरानी है। दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय से लेकर लाँस एंजिल्स के कांउटी म्यूजियम ऑफ आर्ट में रखी १५वी सदी के बाद की कई पेंटिंग इसका प्रमाण है। बाद में पटाखे चलाने की परंपरा हमारे दीपावली त्यौहार में शामिल हो गई। आज देश का पटाखा उद्योग दुनिया में दूसरे नंबर पर है, प्रतिवर्ष दीपावली के अवसर पर लगभग ४ हजार करोड़ रुपये के पटाखे बिकते हैं।

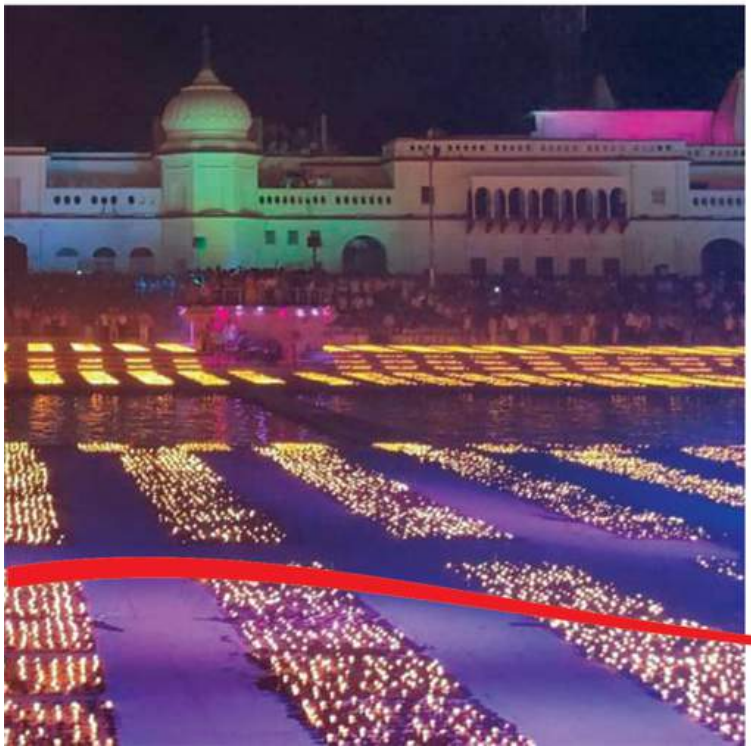

❊ अंतरिक्ष वैज्ञानिक श्रीपति ने **'ज्योतिष रत्नमाला'** पुस्तक में दीपावली का वर्णन किया है। वे लिखते हैं इस दिन लोग उत्सव की तरह तैयार होते हैं, मंदिर जाते हैं, दान देते हैं। अलबरूनी ने भी पुस्तक **'तहकीक अल हिंद'** में भी **'दीवाली'** के नाम से इसका वर्णन किया है।

❊ दीपावली का पर्व भारत में ही नहीं अपितु दुनियाभर में मनाया जाता है। सिंगापुर में एक महीने लंबा मेला लगता है, लगभग ३० लाख लोग आते हैं हजारों लाइटों से रोशन किया जाता है।

❊ अमेरिका में भी टाइम्स स्क्वेयर में दीपावली का सबसे बड़ा आयोजन होता है। यहाँ २००९ से राष्ट्रपति ने व्हाइट हाउस में दीपावली की शुरुआत की थी।

❊ ऑस्ट्रेलिया में सिडनी का ऑपेरा हाऊस सोने जैसा दमकता है, रामलीला का मंचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।

❊ लंदन और लीस्टर (ब्रिटेन) में ट्रेफलगर स्क्वेयर में मुख्य कार्यक्रम होते हैं।

❊ मॉरीशस में दीपावली पर बिल्कुल भारत जैसा ही माहौल होता है, लोग घरों के बाहर रंगोली बनाते हैं दीये जलाते हैं और घरों में सूर्यास्त से पहले ही मिठाई बनाने की परंपरा आज भी बनी हुई है। इसी प्रकार नेपाल, फ्राँस, जर्मनी में भी प्रकाश उत्सव मनाया जाता है।

**– महेश्वर (म. प्र.)**

# बम पटाखे फुस्स

– विजय जी. खत्री

दीवाली का पर्व निकट था। नन्हें सोनू की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। वह दादाजी के साथ बाजार गया और नए कपड़े, मिठाईयाँ, खिलौने, पूजा का सामान, पटाखे और बहुत कुछ खरीद लाया।

शाम को जब मोहल्ले के सभी बच्चे इकत्र हुए तो सभी एक–दूसरे के साथ दीवाली के बारे में चर्चा करने लगे। सभी बच्चे अपने–अपने खरीदे पटाखे, कपड़े, खिलौने आदि की बातें करने लगे। बच्चा टोली एक–दूसरे के पटाखे देखने के लिए बहुत उत्सुक थी।

सोनू ने भी उसके पटाखे सबको दिखाएँ। सोनू तरह–तरह के पटाखे खरीद लाया था। फुलझड़ी, चकरी, रॉकेट, अनार, रोशनी, चटपटी... वाह भैया वाह! सोनू के सभी मित्र उसके पटाखे देखकर बहुत प्रसन्न हो गए।

सोनू ने पटाखों का परिचय अपने मित्रों से करवाया इसलिए पटाखों को भी बहुत खुशी हुई। उन्हें नन्हें–प्यारे बच्चों का साथ बहुत पसंद आया। उन्होंने सोचा कि– ''इस बार सोनू और उसके मित्रों के साथ दीवाली मनाने का सच में बहुत मजा आएगा।'' फिर पटाखे दीवाली पर्व पर क्या किया जाए उसका आयोजन करते–करते कब सो गए उन्हें भी पता नहीं चला।

दूसरे दिन पटाखें सुबह जल्दी ही उठ गए और उछल–कूद करने लगे। उन्होंने देखा कि नन्हा सोनू चिड़िया और उसके प्यारे–नन्हें बच्चों को दाना–पानी दे रहा था। एक नन्ही चिड़िया ने सोनू के घर में घोंसला बनाया था। चिड़िया और उसके बच्चे चीं... चीं.. आवाज कर खुशी–खुशी सोनू के दिए हुए चावल खाने लगे और पंख फड़फड़ाकर सोनू का आभार व्यक्त करने लगे। पटाखों को सोनू की यह अच्छी आदत बहुत पसंद आई।

सोनू के मोहल्ले में एक कुतिया ने हाल ही में चार पिल्लों को जन्म दिया था। पटाखों ने देखा कि सोनू कुतिया और उसके नन्हें–नन्हें पिल्लों को दूध देने जा रहा था। जैसे ही सोनू ने पिल्लों को दूध देने के लिए पुचकारा वे तुरन्त दौड़ते हुए उसके पास आए और उसके पैरों में रेंगने लगे। उसके बाद कुतिया और उसके बच्चें पूँछ हिलाते हुए सारा दूध पी गए। यह देख पटाखों ने सोचा– ''नन्हा सोनू तो सच में बहुत दयालु है।''

थोड़ी ही देर में एक गाय उसके बछड़े के साथ

आकर सोनू के घर के बाहर खड़ी रही। सोनू ने झट से जाकर दोनों को एक-एक रोटी दे दी। बछड़े ने तो रोटी खाते-खाते सोनू का हाथ चाट लिया। सोनू ने मुस्कुराते हुए कहा- ''तुम अब बहुत नटखट हो गए हो। प्रतिदिन मेरे हाथों को चाटने की तुम्हें आदत- सी हो गई है।''

पटाखे तो सोनू की ऐसी प्यारी-प्यारी बातें सुनकर हँसने ही लग गए। इतने में सोनू के दादाजी का स्वास्थ्य अचानक खराब हो गया। उनके सिर में दर्द होने लगा। सोनू ने झट से जाकर उन्हें दवाइयाँ और पानी दे दिया। दादाजी को शीघ्र ही आराम मिल गया।

दादाजी प्रसन्न हो गए। उन्होंने कहा- ''सोनू! तू तो सच में बहुत ही अच्छा और संस्कारी बच्चा है।''

सोनू ने मुस्कुराते हुए कहा- ''दादाजी! इसमें क्या? बड़ों की सेवा करना छोटों का कर्त्तव्य होता है।''

सोनू के संस्कार और विवेक को देखकर उसके माँ-पिताजी भी गर्व अनुभव करने लगे। पटाखे भी सोनू की प्रशंसा करने लगे। फिर एक-दूसरे से कहने लगे- ''इस बार सोनू जैसे संस्कारी बच्चे के साथ दीवाली मनाने में सच में बहुत मजा आएगा।''

सोनू भी दीवाली के पर्व की उत्सुकता के साथ राह निहारने लगा। वह सोचने लगा कि दीवाली की रात को वह दीये जलाएगा.. नए कपड़े पहनेगा.. भगवान की पूजा करेगा.. मिठाइयाँ खाएगा.. और बहुत सारे पटाखे फोड़ेगा।

चटपटी कहने लगी- ''और वह कुतिया और उसके नन्हें पिल्ले? गाय और उसका बछड़ा? बेचारे डर के मारे भागदौड़ मचाने लगेंगे। इन प्राणियों के कान वैसे भी बहुत संवेदनशील होते हैं। इस तरह बच्चे-बूढ़े, पशु-पक्षी, इन सबको हैरान करना अच्छी बात नहीं है।''

नन्हें पटाखों ने बम पटाखों को ऐसा न करने के बारे में समझाया। लेकिन बम पटाखों ने किसी की बात मानी ही नहीं। वे तो यही सोचकर उछल रहे थे कि जोरों से धमाका करने में और सबको डराने-भगाने में कितना मजा आएगा।

उसी समय में दादाजी ने सभी बच्चों को समझाते हुए कहा- ''प्यारे बच्चो! फुलझड़ी जलाने के बाद गरम तार को इस पानी वाले बर्तन में डाल देना। और सावधान रहना कि पटाखों के कारण से किसी को नुकसान न पहुँचे, समझे? और हाँ, बड़े बम पटाखें फोड़कर किसी निर्दोष को परेशान मत करना। यह अच्छी बात नहीं है।''

बच्चों ने दादाजी की सूचना को सम्मान दिया। सभी बच्चों ने फुलझड़ी हाथ में लेकर सावधानी के साथ जलाई। उसमें से झड़ते हुए रंगबिरंगे तारों को देख सभी तालियाँ बजाने लगे। कुछ तो नाचने-कूदने ही लग गए। चारों ओर बस, दीवाली का आनंद ही आनंद छाया हुआ था।

लेकिन नन्हें पटाखों को चिंता होने लगी कि कहीं बम पटाखों के कारण से इन सबके रंग में भंग ना पड़ जाए।

इतने में बड़े बम पटाखें तूफानी मीकू के हाथ में आ गए। मीकू ने जैसे ही चुपके से बम पटाखे हाथ में लेकर फोड़ने की सोची कि वे उसके हाथों से छूटकर पानी वाले बर्तन में जा गिरे। पानी में भीगते ही सभी बम पटाखे **'फुस्स'** हो गए। सबको डराने और परेशान करने की उनकी बुरी मंशा पर पानी फिर गया।

नन्हें पटाखे इस बात से प्रसन्न हो गए। उनकी चिंता दूर हो गई। चकरी ने हर्षित होकर कहा- ''जो दूसरों के बारे में बुरा सोचते हैं, उनका यही परिणाम होता है।''

फिर बड़े बम पटाखों ने नन्हें पटाखों से क्षमा माँगी और फिर कभी भी किसी को परेशान ना करने का प्रण किया। नन्हें पटाखे प्रसन्न होकर गाने लगे-

**बम पटाखे हो गए फुस्स,**
**बच्चे-बूढ़े सब हैं खुश।**
**दूसरों को परेशान करे वो**
**पटाखों-सा हो जाए ठुस्स।।**

फिर सभी पटाखे बच्चों के साथ दीवाली का आनंद मनाने लगे। बच्चों को भी बहुत मजा आ गया। दादाजी, चिड़िया और उसके बच्चे, कुतिया और उसके पिल्ले, गाय और उसका बछड़ा, सभी बच्चों को हर्षित देखकर मुस्कुराने लगे। और पटाखे? ये देखो, दीवाली का कितना आनंद उठा रहे हैं।

**- डीसा,**
**(गुजरात)**

# भव्यता से मना साहित्यकार सम्मान एवं पुस्तक लोकार्पण समारोह

## पं. हरप्रसाद पाठक- स्मृति बालसाहित्य पुरस्कार समिति मथुरा का आयोजन

**मथुरा।** मथुरा का यह सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार सम्मान समारोह २६ सितम्बर २०२१ को प्रातः प्रत्यक्षतः मथुरा के प्रसिद्ध विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर, दीनदयाल नगर के विशाल प्रेक्षागृह में व आभासी माध्यम पर अपराह्न में ऑनलाईन आयोजित हुआ।

जिसमें लखनऊ की वरिष्ठ साहित्यकार **श्रीमती स्नेहलता जी** की अध्यक्षता में एवं देवपुत्र पत्रिका के कार्यकारी सम्पादक एवं वरिष्ठ बाल साहित्यकार इन्दौर के **गोपाल माहेश्वरी** के मुख्य आतिथ्य में बीकानेर की बाल साहित्यकार **इंजी. आशा शर्मा** एवं लखनऊ के **श्री श्यामकृष्ण सक्सेना** को पं. हरप्रसाद पाठक स्मृति बाल साहित्य भूषण पुरस्कार एवं लखनऊ के **राजा भैया गुप्ता 'राजाभ'**मुरैना के **डॉ. कैलाश गुप्ता 'सुमन'**, भोपाल की **डॉ. रंजना शर्मा, श्रीमती रागिनी उपलपवार**, कटनी की **डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'** छिबरामऊ के **प्रभाष मिश्र 'प्रियभाष'**, मुबानी उत्तराखण्ड के **इंजी. ललित शौर्य**, रायबरेली के **अरविन्द कुमार साहू** को पं. हरप्रसाद पाठक-स्मृति बाल साहित्य श्री सम्मान से अलंकृत किया गया। संचालन वरिष्ठ साहित्यकार **आचार्य नीरज शास्त्री** ने किया। यह जानकारी पं. हरप्रसाद पाठक स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार समिति मथुरा के सचिव एवं तुलसी साहित्य संस्कृति अकादमी न्यास मथुरा के संरक्षक **डॉ. दिनेश पाठक 'शशि'** ने दी।

# स्वार्थी सोच का परिणाम

– मीना जैन

रात के अँधेरे में आँगन के बीचो–बीच जलते दीपक की लौ खुशी से झूमती पूरे आँगन में उजाला फैला रही थी लेकिन रूई की बाती, तेल और मिट्टी का दीपक तीनों मिलकर मन ही मन भगवान से प्रार्थना कर रहे थे कि–

''हे भगवान! यह लौ हमारे कारण ही जिंदा है और इसके कारण हम परेशान हो रहे हैं इस लौ को बुझा दो ताकि हम सभी का जीवन लम्बा और सुरक्षित रहे।'' कुछ क्षणों पश्चात ही हवा का एक तेज झोंका आया और लौ बुझ गई। लौ के बुझते ही आँगन में अंधकार छा गया और तीनों प्रसन्न थे बाती सोच रही थी मैं जलने से बच गई वहीं तेल भी अपनी लम्बी आयु के प्रति निश्चित हो गया दीपक ने भी चैन की साँस ली कि वह तपने और काला होने से बच गया।

लौ को बुझे दो–तीन मिनिट ही हुए थे कि पड़ोस में रहने वाला बालक दौड़ता हुआ आँगन में आया और अँधेरा होने के कारण अंजाने में ही उसका पैर दीपक पर पड़ गया। फिर क्या था, पलभर में दीपक टूट कर चूर–चूर हो गया। तेल व बाती वहीं मिट्टी में धँस गए और देखते ही देखते तीनों का अस्तित्व समाप्त हो गया।

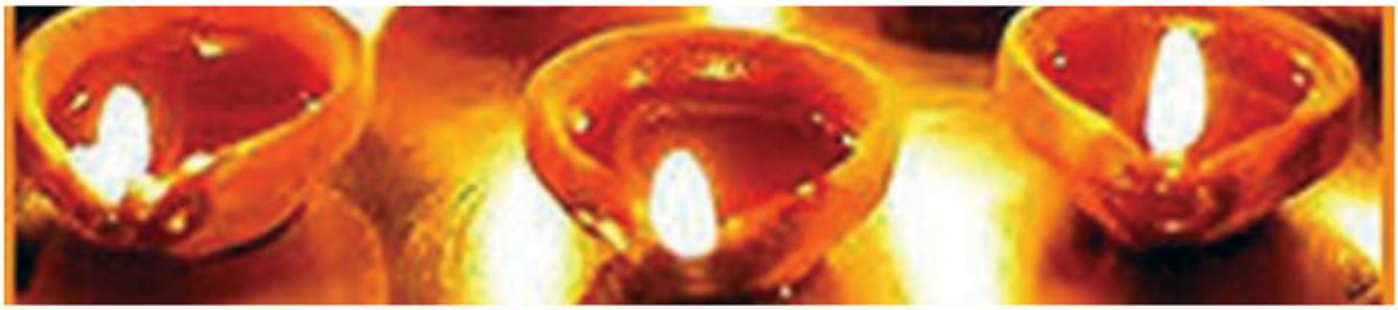

# दीया और बाती

बात बरसों पूर्व की है दीपावली की रात लक्ष्मी जी को देखते ही बाती ने दीये पर हेय दृष्टि डालते हुए अपने मन की व्यथा कुछ यूँ प्रगट की–

''हे माँ लक्ष्मी! मेरी एक शंका का समाधान कीजिए, जलती मैं हूँ जग में प्रकाश फैलाती मैं हूँ किन्तु नाम हमेशा दीपक का ही होता है सभी यही कहते हैं देखो दीपक जल रहा है। दीपक प्रकाश फैला रहा है, दीप जलाओ आरती करनी है वगैरह वगैरह। माँ यह कहाँ का न्याय है करे कोई और नाम किसी और का?'' इस पर पहले तो लक्ष्मी जी मुस्कुराई फिर गंभीर हो बोली–

''बाती! तुम्हारी शंका अपनी जगह पर सही है लेकिन तुमने यह कभी सोचा कि दीपक नहीं होता तो तुम जलती कैसे? यदि किसी अन्य स्थान पर रखकर तुम्हें जलाया जाता तो निश्चित ही उजाले के स्थान पर अनहोनी की संभावना बनी रहती इसीलिये तुम्हें केवल दीये के अंदर ही रखकर जलाया जाता है कहने का आशय यह की तुम्हारा जन्म तो जलने के लिए ही होता है पर दीपक का जन्म केवल तुम्हें आश्रय देने के लिए और यह संसार का नियम है। नाम और सम्मान उन्हीं को मिलता है जो औरों के लिए जीते हैं। उस दिन से बाती को दीये की महत्ता समझ में आ गई फिर कभी उसने दीये को हेय दृष्टि से नहीं देखा।

– उज्जैन (म. प्र.)

आलेख : धन्वंतरि जयंती पर विशेष

टीकाकरण की वैदिक विधि : वैदिक वेक्सीनेशन

# सुवर्णप्राशन

– डॉ. अनुपम ताम्रकार

भगवान धन्वंतरि

बच्चो! दीपावली के दो दिन पूर्व अर्थात् कार्तिक मास की कृष्ण त्रयोदशी (धन तेरस) को आयुर्वेद के आदि देव भगवान धन्वंतरि की जयंती आती है। लोग धन तेरस का अर्थ धन से जोड़ते हैं पर सबसे बड़ा धन तो हमारा स्वास्थ्य ही है सदा स्वस्थ रहने के उपाय बताने वाले उपवेद का नाम है आयुर्वेद और इसी के आदि देव हैं धन्वंतरि।

आपने भगवान धन्वंतरि का चित्र देखा है? न देखा हो तो अब ध्यान से देखिये। उनके हाथों में है एक सोने का कलश जिसमें भरा है अमृत दूसरे हाथ में हैं कुछ दिव्य औषधियाँ (जड़ीबूटियाँ)। यह वही अमृतकलश है जिसे प्राप्त करने के लिए देवताओं और राक्षसों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था। यह कथा तुमने अवश्य सुनी होगी न सुनी हो तो अपने दादा–दादी से अवश्य पूछना।

अमृत का अर्थ लगाया जाता है जिसे पीने के बाद कभी मरे ही नहीं। यह देवताओं के लिए संभव है इसीलिए उनका नाम भी है '**अमर**', पर धरती पर जन्मे प्रत्येक प्राणी को तो कभी न कभी मरना ही पड़ता है। बाकी तो स्वस्थ रहते हुए हमारे द्वारा किए गए अच्छे–अच्छे कामों का यश ही अमर होता है। अमर शब्द के पहले एक और शब्द जोड़कर बोला जाता है– '**अजर अमर**'। अजर का अर्थ है बिना बुढ़ापे के बुरे प्रभाव भोगते हुए पूरी आयु जीना। यह बुरे प्रभाव क्या? आँखों से कम दिखना, कानों से कम सुनना, शरीर की शक्ति कम होना, चमड़ी पर झुर्रियाँ आना आदि ऊपर से दिखने वाले प्रभाव हैं। अंदर भी कई बीमारियाँ शरीर को कष्ट देती रहती हैं। इन प्रभावों से बचे रहकर हम पूरी क्षमता व सक्रियता से काम करते रहें यही अजर होना है। आयुर्वेद इसी का उपाय बताता है। बीमार होने पर स्वस्थ होने के उपाय या औषधियाँ तो बाद की बात है बीमार ही न पड़ें इसका उपाय भी है आयुर्वेद में।

हमारे पूर्वजों ऋषि–मुनियों ने परम्परागत रूप से हजारों–लाखों वर्षों के अध्ययन अनुसंधान व प्रयोग कर धातुओं, खनिजों, प्राणियों और वनस्पतियों से ऐसे योग (नुस्खे या फार्मूले) बनाए जो आज भी अचूक प्रभाव रखते हैं।

बच्चो! पिछले पंद्रह–बीस महिने सारे विश्व के लिए बहुत ही कठिनाई भरे बीते। कोरोना नामक बीमारी की चपेट से सारा संसार काँप उठा। सभी वैज्ञानिकों ने इम्यूनिटी अर्थात् रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने पर जोर दिया। **रोग पैदा ही न हों शरीर की ऐसी क्षमता बनाए रखना आयुर्वेद का मूल विचार है।** वैज्ञानिकों का अनुमान यह है कि यदि कोरोना की तीसरी लहर आई तो बच्चों पर अधिक असर करेगी ऐसी आशंका बताई है।

मैं डॉक्टर अनुपम ताम्रकार और मेरी पत्नी एवं सहयोगी डॉ. सुभद्रा यह प्रथम लॉकडाउन में नेपाल

काश्यप कुटी नेपाल

के हिमालय क्षेत्र में थे। आप जैसे बच्चों की चिंता में पहाड़ों में खोजबीन करते-करते जा पहुँचे नेपाल की गंडकी अंचल (नेपाल में प्रांत को अंचल कहते हैं) के कास्की जिले के कास्की कोट नामक स्थान यानि समुद्र तलसे ७००० फीट की ऊँचाई पर। चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ और सामने अन्नपूर्णा हिमालय की गगनचुम्बी चोटियाँ और पहाड़ों पर ऊगी हजारों प्रकार की वनस्पतियाँ एवं औषधियाँ। स्थानीय लोगों की सहायता से वे एक रोमांचित करने वाले स्थान पर पहुँचे तो उनके सामने थी महर्षि काश्यप की कुटिया। कुटिया क्या उनकी हजारों हजार वर्ष पुरानी प्रकृति की खुली प्रयोगशाला। कुटिया में महर्षि की एक प्रतिमा भी विराजमान है जो बाद में श्रद्धालुओं ने स्थापित की होगी। पास ही था काश्यप ताल। कास्की शब्द काश्यप ऋषि के नाम पर ही अपभ्रंश रूप में बना है।

मैं सरस्वती शिशु मंदिर मैहर का पूर्व छात्र रहा हूँ। हमें प्राचीन भारतीय संस्कृति, पूर्वजों की असाधारण उपलब्धियों के प्रति आस्था के संस्कार उनको जन्मघुट्टी में पिलाए गए थे। फिर कोरोना के कारण सारी मानवता त्रस्त हो तो मानवता का त्रास हरें हम यह प्रार्थना बचपन में प्रतिदिन गाने वाले और अब आयुर्वेद चिकित्सक होकर हम शांत कैसे रहते?

भारतीय चिकित्साशास्त्र का एक ग्रंथ जो उन्होंने अपने चिकित्सा की पढ़ाई के समय पढ़ा था

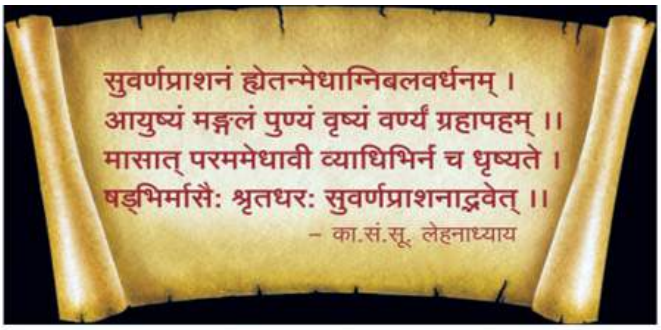


उसका नाम है काश्यप संहिता यह बच्चों की चिकित्सा का विश्व का सबसे पहला ग्रंथ है इसकी पाण्डुलिपि नेपाल में काठमांडू स्थित नेशनल आर्किव ऑफ नेपाल संग्रहालय में वह देखने को भी मिल गई। वे आश्चर्य चकित थे कि उस पोथी में लिखी अनेक औषधीय वनस्पतियाँ आज भी काश्यप पर्वत क्षेत्र में ऊगती हैं।

इसी संहिता में आयुर्वेद के एक बहुत महत्वपूर्ण प्रयोग सुवर्ण प्राशन का उल्लेख है। कहते हैं रामायण काल में भगवान राम व उनके भाइयों को भी यह औषधि सेवन कराई गई थी। सुवर्णप्राशन क्या है? सुवर्ण भस्म, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, बच, आँवला, मधुयष्टिका (मुलेठी), गिलोय, बहेड़ा आदि वनौषधियों को गाय के घी व प्राकृतिक शुद्ध शहद के साथ (प्राशन गाढ़ा गाढ़ा-सा) एक द्रव्य (लिक्विड) बनाया जाता है। उसके बाद औषधि निर्माण करके औषधि का रूप दिया जाता है इसकी कुछ बूँदें मुँह में जन्म से सोलह वर्ष की आयु तक के बच्चों को पिलाई जाती है। छः माह तक लगातार प्रतिदिन एवं पुष्य नक्षत्र में भी एक खुराक दी जाती है। यह संस्कार कहलाता है सुवर्णप्राशन।

निश्चित रूप से यह औषधि जानकार वैद्य के निर्देशन में तैयार होती है क्योंकि कौन-सी औषधि कितनी व कैसे मिलाना है? यह वह ही जानते हैं वैसे तो आज सुवर्णप्राशन भारत में कई जगह कराया जाता है और कई कंपनियों द्वारा निर्माण भी किया जाता है परंतु मैं एवं डॉ. सुभद्रा ने हिमालय पर पाई

जाने वाली औषधियों पर स्वयं शोध करके प्राचीन काल से वैद्यों द्वारा अनुभूत यह प्रयोग अनेक बच्चों पर करके यह पाया है कि आश्चर्यजनक ढंग से सुवर्णप्राशन करने वाले बच्चे सर्दी, जुकाम, खाँसी, बुखार जैसे संक्रमण से तो बचे ही रहते हैं उनकी स्मरण शक्ति में कई गुना वृद्धि होती है।

उनकी त्वचा (चमड़ी) निखरने लगती हैं एवं आँखों की ज्योति बढ़ जाती है। यहाँ तक कि नागौद जिला सतना मध्यप्रदेश की रहने वाली एक बच्ची जो कि जन्म से ही बहुत ही कम देख पाती थी उसे सुवर्णप्राशन के सेवन के बाद से दिखाई देने लगा। ऐसे ही एक बच्चे का मिर्गी (अपस्मार) जैसा रोग भी ठीक हो रहा है।

बच्चो! है न यह चमत्कारी वैदिक वैक्सीन। शास्त्र कहते हैं इसे बचपन में ले लो तो जीवनभर शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता बनी रहती है एवं कोई प्रतिप्रभाव (साइड इफेक्ट) भी नहीं होता है। आपको यह जानकारी अच्छी लगी होगी तो अपने माता–पिता से कहिए कि वे आपको भी अवश्य करवाएँ स्वर्णप्राशन यानि सोने का टीका। यह कोरोना की दवाई नहीं है पर इम्यूनिटी मजबूत रहेगी तो कोरोना सहित कई अन्य बीमारियों से भी आसानी से लड़ सकेंगे आप। सरस्वती शिशु मंदिरों में तो कई स्थानों पर सुवर्णप्राशन करवाया जा रहा है।

**– मैहर (म. प्र.)**

कविता

# नन्हें दीपक

**– डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'**

**ओ माटी के नन्हें दीपक!**
**तू अविरल जलते ही जाना,**
**झौंके आँधी–तूफानों के**
**आएँगे, उनसे टकराना।**

**अँधकार में कदम बढ़ाते**
**राही को है राह दिखाना,**
**आलोकित करने का अपना**
**ध्येय कभी तू भूल न जाना।**

**रखना ध्यान, नहीं धरती पर**
**अँधकार गहराने पाए,**
**हँसते–हँसते आसानी से**
**हर प्राणी आगे बढ़ जाए।**

**– चम्पावत (उत्तराखण्ड)**

बड़ाम !
दूर से देखो मेरा ये बम धमाके से गजब ढा देगा...
बड़ाम
वाकई चाचू गजब हो गया...

छोटी कहानी

# पर्यावरण मित्र दीवाली

– प्रवीन कुमार

आज धनतेरस थी। राहुल बहुत खुश था, क्योंकि आज वह माँ के साथ दीवाली की खरीदारी करने जाएगा। उसकी माँ ने उसे नए कपड़े, पटाखे और उसकी मनपसन्द वस्तुएँ दिलाने का वादा कर रखा था।

उसे ध्यान में आया कि उसका मित्र सोनू भी कह रहा था कि वह भी अपने पिता से कहकर मनपसन्द वस्तुएँ लाएगा। क्यों न उससे मिलकर पता लगाऊँ कि वह क्या–क्या लाएगा।

राहुल सोनू के घर गया। पर सोनू अपने घर की सीढ़ियों पर उदास बैठा था। राहुल ने उससे उदासी का कारण पूछा तो उसने बताया– ''उसके पिता मिट्टी के दीये बनाते हैं आशा थी कि इस बार अच्छे दीये बिकेंगे पर सब बाजार से बिजली वाली झालरें और सजावटी दीये ही खरीद रहे हैं। मिट्टी के दीये बहुत कम बिक रहे हैं। इस कारण से घर में आर्थिक तंगी से पिताजी शायद मुझे मेरी मनपसन्द वस्तुएँ नहीं दिला पाएँगे।''

सोनू की बात सुनकर राहुल भी उदास हो गया। उसने घर आकर सारी बात माँ को बताई। माँ कुछ देर सोचती रही फिर बोली– ''क्यों न हम उनके दीयों के लिए विज्ञापन करें।''

''वह कैसे ?'' राहुल ने कहा।

''तुम्हें और सोनू को चित्रकला आती है न! बस एक पोस्टर बनाओ और उनके घर के आगे लगा

दो, लिख देना कि **मिट्टी के दीये जलाएँ। पर्यावरण बचाएँ।।''**

''हाँ, सुझाव तो अच्छा है।'' राहुल ने कहा।

राहुल सोनू को अपने घर बुला लाया। दोनों ने मिलकर एक सुन्दर-सा पोस्टर बनाया और उसे सोनू के घर के आगे लगाकर एक दुकान बनवा दी।

राहुल ने फेसबुक और व्हाट्सएप पर भी पोस्टर को शेयर कर दिया। राहुल की माँ ने **''मिट्टी के दीये जलाएँ पर्यावरण मित्र दीवाली मनाएँ''** लिखकर मिट्टी के दीये खरीदते हुए फोटो डाली और सोनू के पिता रेणु की दुकान का स्थान व पता भी डाल दिया।

राहुल और सोनू दुकान पर खड़े हो गए। वे दोनों जो भी दीये खरीदता उसे फेसबुक पर **''पर्यावरण मित्र दीवाली''** अभियान के अन्तर्गत अपना चित्र साझा करने को कहते।

इस प्रकार सब एक-दूसरे की देखा-देखी मिट्टी के दीये खरीदकर ले जाने लगे। शाम तक रेणु के काफी दीये बिक चुके थे। रेणु बहुत प्रसन्न था, उसने सोनू को उसके मनपसन्द कपड़े और अन्य वस्तुएँ दिलाई। सोनू उन्हें पाकर बहुत प्रसन्न था पर यह सब राहुल की माँ के कारण ही सम्भव हुआ जिन्होंने इसका सुझाव दिया था।

राहुल भी अपने मित्र को प्रसन्न देखकर बहुत प्रसन्न था। सोनू के गरीब परिवार की सहायता करके राहुल और उसकी माँ को बहुत अच्छा अनुभव हो रहा था।

**- रेवाड़ी (हरियाणा)**

महावीर निर्वाणोत्सव : दीपावली

# वर्धमान से महावीर

**- राजकुमार जैन 'राजन'**
**- आकोला, (राजस्थान)**

**बचपन बीता राजमहल में,**
**पलकर बने फकीर।**
**कठिन तपस्या करके जिसने,**
**बदली अपनी तकदीर।।**
**सभी इन्द्रियों को वश में करके,**
**पाया जिसने केवल ज्ञान।**
**जीव मात्र की रक्षा हित ही,**
**लगाया जिसने अपना ध्यान।।**
**जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर,**
**कहलाए महावीर भगवान।**
**सत्य-अहिंसा का प्रचार कर,**
**सब लोगों को दिया ज्ञान।।**
**उनकी शिक्षाओं का होता,**
**पूरे विश्व में ही गुणगान।**
**वर्धमान से महावीर बनकर,**
**कर गए वह कार्य महान।।**

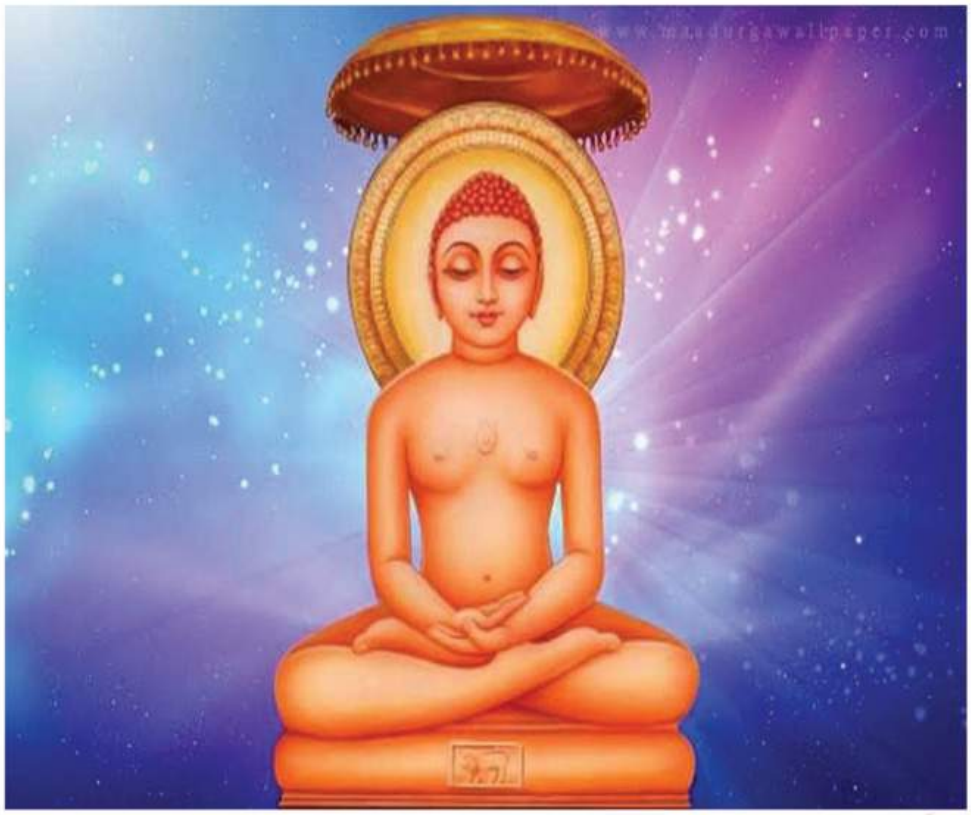

# राज वैद्य की नियुक्ति

– तपेश भौमिक

महाराज कृष्णचंद्र अपने प्राय: सभी कामों में महामंत्री से विचार–विमर्श किया करते थे पर इन दिनों वे राज–सभा के विदूषक गोपाल भांड पर ही अधिक निर्भर रहने लगे थे। तभी बात ऐसी हुई कि राज वैद्य की नियुक्ति होनी थी। महाराज ने गोपाल के ऊपर पूरी जिम्मेवारी सौंप दी। इसके लिए साक्षात्कार का दिन तय हुआ।

गोपाल साक्षात्कार लेने लगे। एक–एक कर दूर–दूर से आए वैद्यों को बुलाया जाने लगा। प्रथम वैद्य के प्रवेश करने पर गोपाल ने पूछा–

''अच्छा यह बताइए कि आपके चिकित्सालय के आस–पास भूतों का उपद्रव है क्या?''

वैद्य पहले तो चक्कर में पड़ गया कि यह भी कोई प्रश्न हुआ। फिर उसने कुछ सोच कर कहा–

''जी हाँ, यह एक बड़ी समस्या है। दिनों–दिन भूतों का उपद्रव बढ़ता ही जा रहा है। इस कारण मैं ठीक ढंग से रोगियों की चिकित्सा नहीं कर पा रहा हूँ।'' इतनी सी बात करके उसने पहले वैद्य को विदा दे दी।

अब दूसरे वैद्य को भी बुला कर एक ही प्रश्न पूछा गया। तब उसने भी पहले जैसा ही उत्तर दिया। इसी प्रकार और कई वैद्यों ने भी उत्तर देकर इस उधेड़–बुन में पड़ गए कि भला यह भी कोई साक्षात्कार है! इसी प्रकार कई वैद्य अंदर गए और साक्षात्कार देकर लौट आए। वे सारे के सारे यह चर्चा करने लगे कि भाई! इस प्रश्न के पीछे कौन–सा

रहस्य छिपा है?

अब अंत में जिस वैद्य को बुलाया गया उनसे भी गोपाल ने ही पूछा। पर उसका साफ उत्तर था कि कोई भूत–प्रेत का चक्कर नहीं है। जिनका मन अपने काम में नहीं लगता या जो अपने काम में सफल नहीं होता वही केवल कोई न कोई बहाना ढूँढ़ता है अपनी असफलता को छिपाने के लिए। मेरे यहाँ कोई भूत नहीं है।

इसी बीच इस प्रकार साक्षात्कार लिए जाने पर किसी ने महामंत्री के कान भर दिए। उसने सीधे गोपाल पर यह आरोप लगा दिया कि उसने राज वैद्य की नियुक्ति को एक विनोद बनाकर रख दिया। महामंत्री ने महाराज के कान भरते हुए कहा।

''भला एक विदूषक राज वैद्य की नियुक्ति के लिए साक्षात्कार कैसे ले सकता है?''

महाराज कुछ कहते कि उससे पहले ही गोपाल ने महामंत्री की बातों को नकारते हुए उनसे अंतिम साक्षात्कार देने वाले वैद्य के बारे में संस्तुति की। लेकिन महाराज को भी गोपाल के इस कार्य पर शंका हुई। इसलिए उन्होंने अन्य वैद्यों की तुलना में अंतिम वैद्य की विशेषताओं के बारे में पूछा। इस पर गोपाल ने बताया।

''महाराज! जिन वैद्यों ने बताया था कि उनके यहाँ भूतों का उपद्रव है, वास्तव में उनके यहाँ गलत चिकित्सा के कारण रोगी आए दिन मरते रहते हैं। इस गलती का अनुभव उन्हें स्वयं ही होता है, इसलिए उन्हें मरने वालों की प्रेतात्मा का डर होता है। जो पूरे आत्मविश्वास के साथ काम करते हैं उन्हें किसी का डर नहीं सताता। मैं जिसकी संस्तुति कर रहा हूँ उसने सबसे अलग उत्तर देते हुए कहा था कि आत्मविश्वास के साथ काम करने वालों को किसी का डर नहीं होता।

अत: अंतिम चिकित्सक राज वैद्य की नियुक्ति पाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है।''

**– गुड़ियाहाटी, कूचबिहार (पं. बंगाल)**

## बढ़ता क्रम 02

संकेत:– – देवांशु वत्स

1. सूर्योदय।
2. पुत्र का पुत्र, पोता को यह भी कहते हैं।
3. पुरुषत्त्व, पराक्रम।
4. पुरोहित का कार्य अथवा कर्म।
5. पूर्णिमा संबंधी।
6. पुष्ट करने वाला आहार।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पौ | | | | |
| 2. | पौ | | | | |
| 3. | पौ | | | | |
| 4. | पौ | | | | |
| 5. | पौ | | | | |
| 6. | पौ | | | | |

उत्तर: 1. पौ, 2. पौत्र, 3. पौरुष, 4. पौरोहित्य, 5. पौर्णमासिक, 6. पौष्टिक आहार।

# अब कैसे जाती लक्ष्मी

– दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

एक सेठ था– धन्ना शाह! उसके यहाँ कई पीढ़ियों से लक्ष्मी का वास था। वह था भी लक्ष्मी का अनन्य भक्त। लक्ष्मी से सम्बन्धित पर्वों–व्रतों पर वह पूजा–पाठ का भव्य आयोजन करता था।

एक बार दीपावली की पूजा के बाद लक्ष्मी ने सेठ को साक्षात् दर्शन दिया और कहा–

''धन्ना शाह! मैं तुम्हारी भक्ति से बेहद प्रसन्न हूँ, लेकिन अब तुम्हारे यहाँ से मेरी विदाई का समय आ पहुँचा है।''

''क्यों माँ?'' सेठ चौंककर हाथ जोड़ते हुए खड़ा हो गया– ''क्या मेरी पत्नी झगड़ालू हो गई है? वह मैली–कुचैली और गन्दी रहने लगी है या उसमें ईर्ष्या–द्वेष और परनिन्दा जैसी बुराईयाँ आ गई हैं?''

''नहीं बेटा! वह सुशीला है।'' लक्ष्मी ने उत्तर दिया।

''इसका अर्थ मेरे बेटों में दोष आ गया है। वे चरित्रहीन, शराबी और जुआरी बन रहे हैं?''

''नहीं, तुम्हारे बेटे लायक हैं।''

''फिर मेरी बहुएँ आलसी और कामचोर हो गईं होंगी?''

''नहीं, वे मेहनती हैं।''

''माँ! अब तो मैं ही बचा हूँ। क्या घमण्ड, क्रोध, लापरवाही जैसे दुर्गुण मेरे अन्दर आ गए हैं?''

''ऐसा भी कुछ नहीं है।''

''माँ! तब आप अपने स्नेह की छाया मेरे ऊपर से क्यों उठाने जा रही हैं? कोई कारण तो होगा ही।''

लक्ष्मी के जगमगाते दिव्य मुख की ओर देखते हुए धन्नाशाह ने विनीत भाव से पूछा।

''बेटा! लक्ष्मी के अलावा मेरा नाम चंचला भी है। मैं एक स्थान पर स्थिर नहीं रह सकती। यह तो तुम लोगों के सद्गुण थे जो मैं इतने समय तक यहाँ टिकी रह गई। अब भी तुमसे स्नेह न होता तो अपने जाने की सूचना देने न आती। बल्कि चुपचाप चली जाती। मैं जाते–जाते भी तुम्हें सुख दे जाना चाहती हूँ। इसलिए तुम कोई एक वरदान माँग लो।'' लक्ष्मी ने स्पष्ट किया।

सेठ विचार में पड़ गया। लक्ष्मी के बदले उनसे क्या माँगे? उसे असमंजस में पड़ा देख, लक्ष्मी ने सुझाव दिया– ''अपने परिवार वालों से विचार–विमर्श करके निर्णय ले लेना। मैं अगली पूजा पर

तुम्हारी इच्छा जानने पुन: आऊँगी।''

लक्ष्मी तो इतना कहकर अन्तर्ध्यान हो गईं, लेकिन धन्नाशाह के चिंता की सीमा न रही। उसने अगले दिन से परिवार के एक-एक सदस्यों से विचार-विमर्श करना आरम्भ कर दिया।

इस प्रकार तीन सुझाव सामने आए। पत्नी का मत था कि जाती हुई लक्ष्मी से ढेरों सोना-चाँदी और मणि-माणिक्य माँगना चाहिए।

बेटे बड़ी जागीर लेना चाहते थे। बहुओं का सुझाव था कि लोहे को सोने में बदल देने वाला पारस पत्थर लेना अच्छा रहेगा।

सेठ को एक कोई बात जम नहीं रही थी। उसका सोचना था कि जब लक्ष्मी ही विदा लेने वाली हैं तो उन्हीं के यह छोटे-बड़े रूप कितने दिन साथ देंगे। इसी सोच-विचार में कई दिन व्यतीत हो गए।

यहाँ तक कि दीपावली की लक्ष्मी पूजा का समय निकट आ गया। किन्तु सेठ अभी तक लक्ष्मी जी से माँगने लायक किसी वरदान का निर्णय न कर सका था।

तभी एक दिन उसे छोटी बहू का ध्यान आया। वह इन दिनों मायके में थी। धन्नाशाह ने उसे बुलवा लिया और सारी बात बताकर उसकी भी राय माँगी।

कुछ देर सोचने-विचारने के बाद छोटी बहू बोली- ''बाबूजी! आप लक्ष्मी माँ से कहें कि जाते-जाते वे हमें यह वरदान दे जाएँ कि हमारे परिवार में कभी कलह और मतभेद न हो। हम सब प्रेम से मिल-जुलकर रहें।''

सेठ को यह राय पसन्द आई। उसने दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी पूजा का भव्य आयोजन किया। पूजा के बाद जब लक्ष्मी जी उसकी इच्छा जानने के लिए प्रकट हुईं तो धन्नाशाह ने छोटी बहू की बात दोहरा दी।

लक्ष्मी जी धर्म संकट में पड़ गईं। यह वरदान देने का मतलब था कि सदा के लिए इस परिवार से बँध जाना। क्योंकि सुमति, एकता और शांति के रहते वे कहीं जा ही नहीं सकतीं।

किन्तु वचन देकर वे पलट भी नहीं सकती थीं। इसलिए अन्तर्ध्यान होने से पहले उन्होंने सेठ पर स्नेह भरी दृष्टि डाली और कहा- ''बेटा! तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।''

सचमुच यह वरदान देने के बाद धन्नाशाह के यहाँ से लक्ष्मी और कहीं न जा सकीं।

**- सुलतानपुर (उ. प्र.)**

# बाल साहित्य के भगीरथ : निरंकार देव सेवक

**प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'**

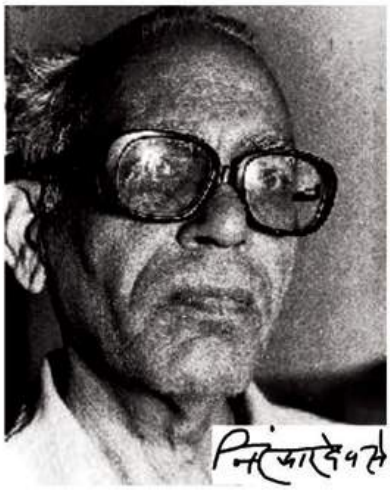

प्यारे बच्चो! निरंकारदेव सेवक (१९ जनवरी १९१९ – २९ अक्टूबर १९९४) बाल साहित्य के सच्चे लेखक और अच्छे समीक्षक थे। अच्छा समीक्षक वह होता है जो बिना किसी पक्षपात के साहित्य के गुण–दोषों का विवेचन करे। सेवक जी बाल साहित्य के पहले इतिहासकार भी थे। सबसे पहले उन्होंने ही १९६६ में **'बालगीत साहित्य का इतिहास'** लिखा। बाल साहित्य के भूले–बिसरे हस्ताक्षरों को जैसे उन्होंने पुनर्जीवन दिया, अत: उन्हें बाल साहित्य का भगीरथ भी कह सकते हैं।

उत्तर प्रदेश के बरेली महानगर में जन्मे सेवक जी ने एम. ए. हिन्दी, एल–एल.बी. और बी. टी. की शिक्षा प्राप्त की। वे प्रारम्भ में शिक्षक रहे और फिर अधिवक्ता हो गए।

उनकी सोच व्यापक थी। दिग्गज से दिग्गज, नए से नए और गुमनाम: सभी से उनका संपर्क था। सुप्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ बच्चन जब बच्चे थे तो उनके पिता हरिवंशराय बच्चन ने सेवक जी से उनके लिए बाल साहित्य उपलब्ध कराने हेतु निवेदन किया था। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि– सेवक जी जब आपकी तरह बच्चे थे, तभी सात–आठ वर्ष की छोटी–सी आयु में ही उन्होंने कविता लिखना प्रारंभ कर दिया था। उनकी यह तुकबंदी देखिए–

**मिर्चा, तेल, खटाई,**
**इसको छोड़ो सब भाई।**

कम ही लोग जानते हैं कि सेवक जी मूलत: प्रगतिवादी कवि थे। १९४३ में उनकी पुस्तक 'चिनगारी' तत्कालीन समय में बहुत चर्चित रही थी। सेवक जी मंचों पर भी खूब जाते थे। उनकी कविता विहगकुमार इतना लोकप्रिय थी कि लोग उन्हें ही विहग कुमार कहने लगे थे। उन्होंने लोरियाँ भी खूब लिखीं। यद्यपि वे मानते थे कि श्रेष्ठ लोरियाँ लिखने की सर्वाधिक क्षमता तो माताओं में ही होती है। उनकी एक लोरी है–

**मेरा मुन्ना बड़ा सयाना,**
**शाम हुए सो जाता है,**
**ऊधम नहीं मचाता है।**

सेवक जी ने बाल साहित्य में नई शैलियों का भी प्रवर्तन किया। बाल गजल सबसे पहले उन्होंने ही लिखी। यह गजल तो बच्चों में बहुत लोकप्रिय है–

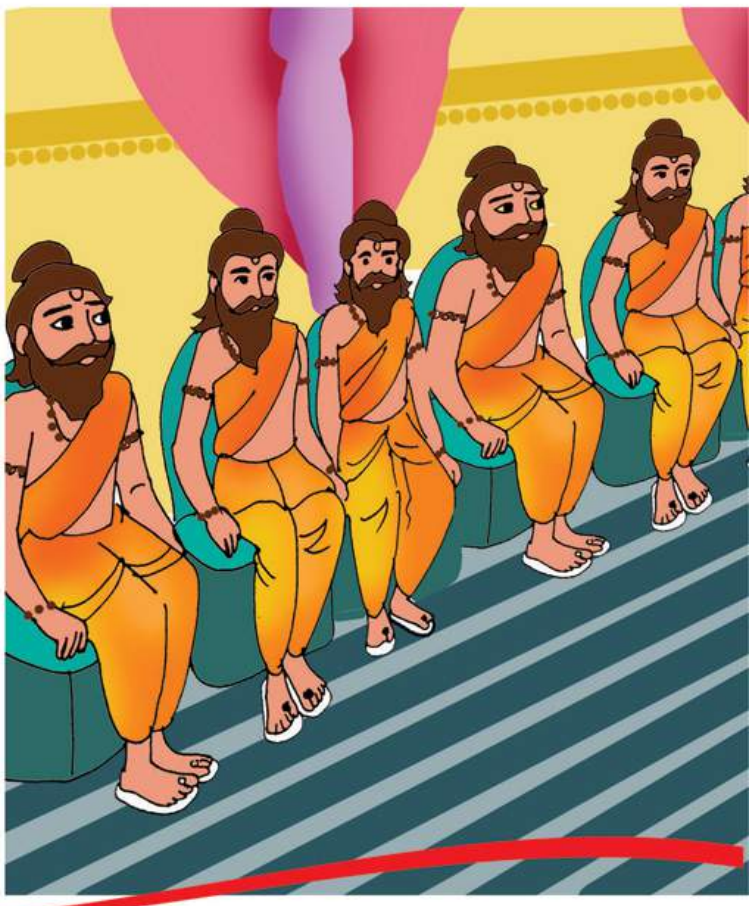

हमको लड्डू कचौड़ी गरम चाहिए।
और सोने को बिस्तर नरम चाहिए।
पढ़ने–लिखने को कहती तो है माँ मगर,
पहले कापी, किताबें, कलम चाहिए।
एक चींटी के बच्चे ने मुझसे कहा–
नन्हें–मुन्नों पे करना रहम चाहिए।
पापा बोले कि बेटा बड़े अब हुए,
करना शैतानियाँ तुमको कम चाहिए।

उनकी कविता 'अगर मगर' बहुत मजेदार है–

अगर–मगर दो भाई थे,
लड़ते खूब लड़ाई थे।
अगर–मगर से छोटा था,
मगर–अगर से खोटा था।
अगर–मगर कुछ कहता था,
मगर नहीं चुप रहता था।

(बाल सखा मई, १९४६ पृष्ठ १६९) सेवक जी के शिशु गीत बच्चों की जबान पर चढ़ जाते हैं–

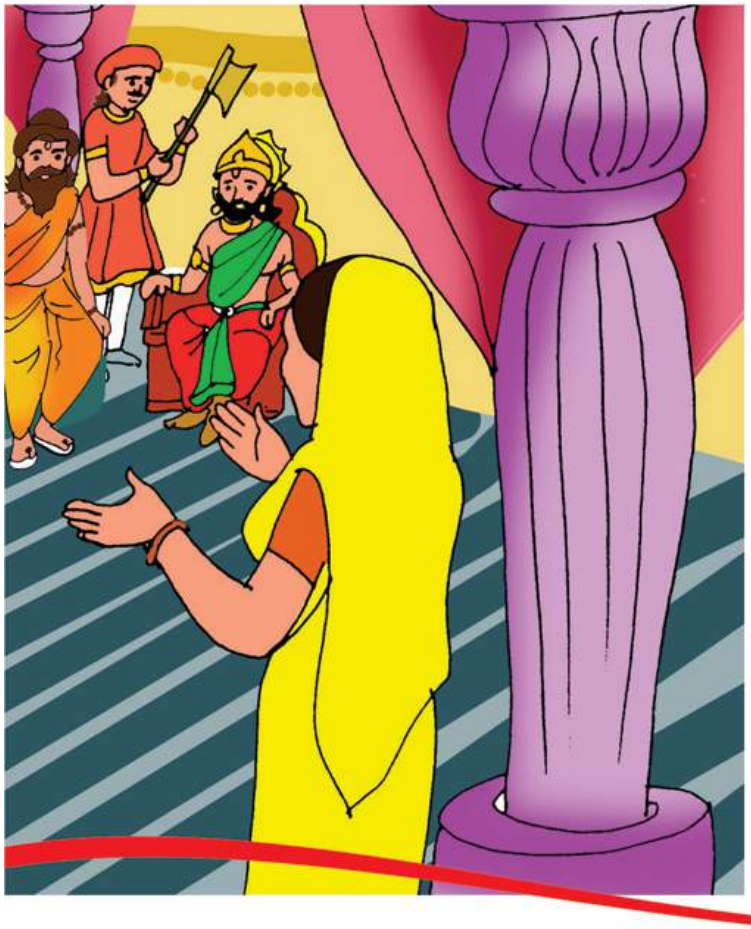

हाथी राजा, कहाँ चले?
सूंड हिलाते कहाँ चले?
पूँछ हिलाते कहाँ चले?
मेरे घर आ जाओ ना,
हलुआ–पूरी खाओ ना!
आओ बैठो कुर्सी पर,
कुर्सी बोली चर–चर–चर!

उनकी ढ़ेरों पुस्तकें हैं। उनकी अनेक कविताएँ आप इंटरनेट के माध्यम से भी पढ़ सकते हैं।

सेवक जी की इच्छा थी कि केन्द्र सरकार द्वारा बाल साहित्य अकादमी की स्थापना की जाए। इस दिशा में कार्य होना चाहिए। सब उन्हें एक बाल कवि के रूप में जानते हैं। लेकिन उन्होंने बच्चों के लिए रोचक बाल कहानियाँ भी लिखीं हैं। लीजिए, उनकी लिखी एक बाल कहानी आपके लिए प्रस्तुत हैं–

## उस पार

प्राचीन काल में एक राजा थे जनक। वह बहुत दयालु थे। प्रजा से बहुत कम कर वसूल करते थे। प्रत्येक आदमी को वह अपने जैसा आदमी समझते। किसानों की तरह स्वयं भी खेतों में जाकर हल चलाया करते थे। पर वह थे बड़े विद्वान। देश में उनका नाम था। उस समय के बड़े–बड़े विद्वान उनके यहाँ आकर ठहरा करते थे।

एक बार उन्होंने विद्वानों की एक सभा की। यह घोषणा कर दी कि जो सबसे बड़ा विद्वान होगा, उसे वह सोने के सींग मढ़ी हुई एक हजार गाएँ देंगे। पाँचाल प्रदेश के निवासी याज्ञवल्क्य उन दिनों देश में प्रसिद्ध विद्वान कहलाते थे। वह भी जनक की उस सभा में गए। सभा में एकत्र दूसरे सभी विद्वान उनसे आतंकित थे। मन ही मन यह सोचते थे कि पुरस्कार तो अंत में याज्ञवल्क्य जी को ही मिलेगा।

सभा प्रारम्भ हुई, तो विद्वानों में विभिन्न विषयों की चर्चाएँ हुईं। हर एक विद्वान प्रश्न पूछता। अपना

मत रखता और उसके समर्थन में तरह-तरह के तर्क देता था। हर एक के भाषण पर श्रोता बीच-बीच में तालियाँ बजाते थे। ये तालियाँ कभी किसी वक्ता की प्रशंसा में बजतीं, तो कभी किसी वक्ता को उत्साहित करने के लिए। इसलिए कभी मंच पर बैठे हुए विद्वानों और कभी श्रोताओं समूह में उत्तेजना भी फैल जाती थी।

राजा जनक मंच से उठकर तर्क और ज्ञान की कोई बात कह, सबको शांत कर देते। बौद्धिक फिर होने लगते। यह क्रम कई दिन तक चलता रहा। राजा जनक को यह चिंता थी, इतने सारे विद्वान यहाँ आए हुए हैं। सभी एक से बढ़कर एक ज्ञानवान हैं। ये सभी कुछ न कुछ बोल रहे हैं और इतने सारे लोग सुन रहे हैं। ये श्रोता भी तो कुछ निर्णय कर ही रहें होंगे कि किसे पुरस्कार मिलना चाहिए? यदि मैंने अपना निर्णय इन सबके निर्णय के विरुद्ध दे दिया, तो ये सब या तो मुझे मूर्ख समझेंगे या मुझ पर पक्षपात का दोष लगाएँगे। बौद्धिकों को सुनने बाद राजाजनक सहित सबकी सहमति यह बन रही थी कि याज्ञवल्क्य जी से अधिक विद्वान कोई दूसरा नहीं है।

अंतिम दिन जब विद्वानों की सभा प्रारम्भ हुई, तो एक पढ़ी-लिखी लड़की उठकर खड़ी हो गई। याज्ञवल्क्य जी से कुछ प्रश्न पूछने की अनुमति चाही। राजा जनक ने उसे अनुमति देकर मंच पर बुला लिया।

लड़की का नाम गार्गी था। उसने याज्ञवल्क्य जी से प्रश्न किया- ''पृथ्वी के उस पार क्या है?'' याज्ञवल्क्य जी ने उत्तर दिया- ''जल।'' ''जल के उस पार क्या है?'' ''वायु।'' याज्ञवल्क्य जी ने कहा। इसके बाद गार्गी प्रश्न पूछती ही गई। उसने वायु, आकाश, सूर्य, ग्रह-नक्षत्र, शून्य, महाशून्य, परलोक, और फिर अंत में यह भी पूछ लिया कि परलोक के पार क्या है? यह अंतिम प्रश्न सुनकर, याज्ञवल्क्य जी को क्रोध आ गया।

वह बोले- ''चुप हो जा लड़की।''

''परलोक के पार भी कुछ होता है?'' गार्गी ने उत्तर दिया- ''क्यों नहीं? जब महाशून्य के बाद परलोक हो सकता है, तो परलोक के उस पार क्यों कुछ नहीं हो सकता?'' यह सुनकर याज्ञवल्क्य जी का क्रोध और बढ़ गया। वह क्रोध में लाल-पीले होते हुए बोले- ''बैठ जा, लड़की नहीं तो तेरा शीश कटकर पृथ्वी पर गिर पड़ेगा।'' गार्गी ने विनम्रता से कहा- ''प्रश्न करने वाले का शीश कभी कटकर नहीं गिरा। शीश तो उसका कटकर गिरता है, जो प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाता।''

याज्ञवलक्य जी क्रोध में आपे से बाहर हो गए। गार्गी को मारने के लिए झपटे। तभी राजा जनक ने उन्हें रोक लिया। गार्गी विस्मित-सी ऋषि का व्यवहार देखती रह गई। दोनों को समझा-बुझाकर शांत करने के बाद, राजा जनक ने गार्गी की ओर देखकर कहा- ''प्रश्नों का कहीं अंत नहीं है गार्गी! जो उत्तर याज्ञवल्क्य जी ने दिए, वे तो ठीक ही थे, इसीलिए मैं...'' राजा जनक अपना वाक्य पूरा करें, इससे पहले ही गार्गी ने कहा- ''सत्य की खोज करना मनुष्य का स्वभाव है। प्रश्न करने से मुझे कोई रोक नहीं सकता।''

राजा जनक ने फिर कहना प्रारम्भ किया- ''मैं घोषणा करता हूँ कि पाँच सौ सोने से मढ़े सीगों वाली गाएँ याज्ञवल्क्य जी को और पाँच सौ गाएँ गार्गी को दी जाएँगी।'' सभा में बैठे हुए सभी लोगों ने राजा जनक के निर्णय का स्वागत करते हुए करतल ध्वनि से मंडप को गुंजा दिया। तभी गार्गी ने फिर कहा- ''मैं ये गाएँ नहीं लूँगी। मैंने पुरस्कार पाने के लिए प्रश्न नहीं किए थे। मैं तो केवल सत्य को जानना चाहती थी।''

सभा समाप्त हुई। गार्गी ने गाएँ नहीं लीं। ऋषि याज्ञवल्क्य जी ने सोने मढ़े सींगों वाली एक हजार गाएँ लेकर अपने देश पाँचाल चल दिए। किन्तु अब वे मन ही मन गार्गी की प्रशंसा कर रहे थे।

**- शाहजहाँपुर (उ. प्र.)**

# विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

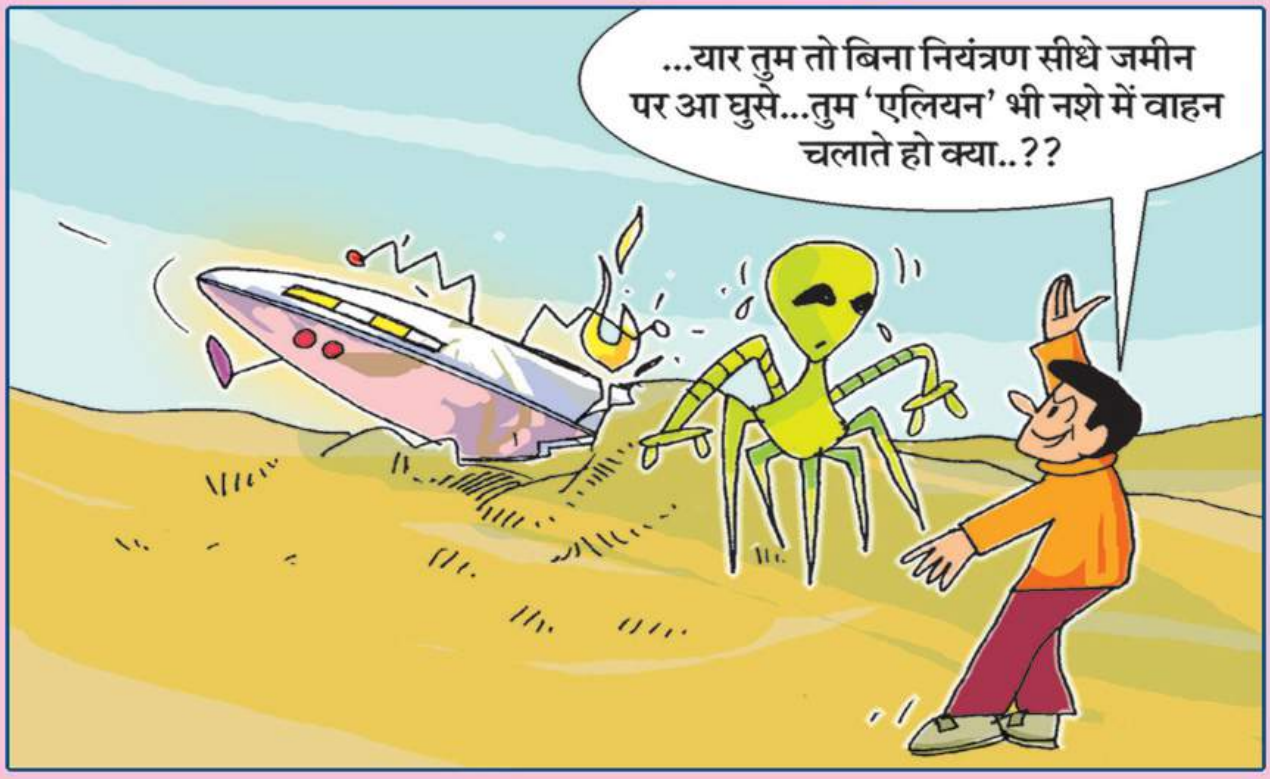

# असली पूजा

– डॉ. सेवा नन्दवाल

पार्वती बार–बार अपने पति सोमेश से कह रही थी कि वे जल्दी से पूजन–सामग्री और प्रसाद ले आएँ। मुहूर्त का समय निकट आ रहा है। सोमेश मगर बिलकुल हिलडुल नहीं रहे थे शायद उन्हें थकान प्रतीत हो रही थी। अपने बेटे वरुण से उन्होंने आग्रह किया– ''बेटे! तुम जाकर यह सामान ले आओ। यहीं पास में तो है दुकानें। साईकिल लेकर जाओ तो जल्दी वापस आ जाओगे।''

पार्वती ने एक बार विरोध भी जताया– ''बाजार में भीड़–भाड़ होगी आप स्वयं चले जाइए न बच्चे को क्यों भेज रहे हैं?''

''अरे! अब हमारा बेटा सयाना हो गया है ऐसी छोटी–मोटी खरीदी तो वह यूँ चुटकी बजाते कर सकता है।'' सोमेश ने उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा।

पार्वती ने थैली और दो सौ रुपये देते हुए सुझाव दे डाला ''जल्दी आ जाना बेटे! आधे घंटे में मुहूर्त का समय समाप्त हो जाएगा।''

''बस माँ! यूँ गया और यूँ आया।'' कहते हुए वरुण साईकिल लेकर निकल गया।

थोड़ी देर में जब वरुण नहीं लौटा तो पार्वती के सिर पर चिंता सवार हुई। वह बार–बार घड़ी देखती और कहती– ''अभी तक आया नहीं वरुण। मुहूर्त का समय निकला जा रहा है।''

''आ जाएगा पार्वती! बाजार में भीड़भाड़ होगी, तुम बाकी तैयारी करके रखो।'' सोमेश ने कहा। उसकी दृष्टि भी दरवाजे पर केन्द्रित थी।

आधा घंटा बीत जाने पर पार्वती के धैर्य का बांध टूटने लगा– ''देखो नहीं आया न। मैंने कहा था आप चले जाते तो... पता नहीं कहाँ अटक गया... कहीं कोई दुर्घटना... ।'' सोमेश ने टोंकते हुए दिलासा दिया– ''कभी तो शुभ सोचा करो, वह आता ही होगा, भीड़ में फँस गया होगा या दूर के बाजार चले गया होगा।''

घंटे भर बाद भी जब वरुण नहीं लौटा तो माता–पिता का धैर्य समाप्त हो गया। पार्वती रूआँसी हो गई तो सोमेश बोला– ''अच्छा ठीक है मैं जाकर देखता हूँ, तुम चिंता मत करो।''

इतना कहते हुए सोमेश अपनी मोटरसाईकिल बाहर निकाल रहे थे कि अस्तव्यस्त–सा वरुण दरवाजे पर प्रकट हो गया। पार्वती दौड़ पड़ी– ''क्या हुआ बेटे! बहुत देर लगा दी और पूजन–सामग्री, प्रसाद कहाँ हैं?'' ''नहीं लाया।'' वरुण धीरे से बोला।

''क्यों क्या पैसे गुम हो गए?'' पार्वती ने डपटते हुए बेसब्री से पूछा। ''अरे! उसे बताने तो दो क्यों एकदम बरस रही हो।'' ''हाँ बेटे! बताओ क्या

हुआ ?'' सोमेश ने पुचकारते हुए कहा।

''पिताजी मैं बाजार जा रहा था.. रास्ते में झुग्गी-झोपड़ी के बाहर एक औरत जोर-जोर से रो रही थी। उसकी लड़की पटाखों से जलकर झुलस गई थी। वह सबसे उसकी लड़की को अस्पताल ले जाने की गुहार कर रही थी पर कोई सहायता को आगे नहीं आ रहा था। मैंने एक रिक्शेवाले को रुकवाया और उस औरत से लड़की को लेकर अस्पताल चलने को कहा।

रिक्शेवाला एक निजी अस्पताल के बाहर जाकर रुका तो वह औरत मुझसे बोली- ''मेरे पास पैसे नहीं है इसे किसी सरकारी अस्पताल में ले चलो वहाँ नि:शुल्क उपचार हो जाएगा।''

मैंने कहा काकी- ''आज दीवाली का दिन है, पता नहीं वहाँ कोई मिलेगा कि नहीं ? फिर यहाँ अच्छा उपचार हो जाएगा।''

लड़की अधिक झुलसी नहीं थी इसलिए बच गई। अस्पताल वालों ने मरहम-पट्टी और दवाई देकर चार सौ रुपये का बिल बना दिया। मैंने दो सौ रुपये तुरंत दे दिए अब दो सौ कहाँ से लाता.. इसलिए अपनी घड़ी उनके पास रखने लगा तो अस्पताल वाले काका बोले- ''नहीं हमें तुम पर विश्वास है बाकी पैसे घर से लाकर दे देना।'' वरुण ने विस्तार से बताया।

''बैठे बिठाए मुसीबत मोल ले ली अब कहाँ से दोगे दो सौ रुपये ?'' पार्वती ने चिढ़ते हुए पूछा।

''माँ! मेरी गुल्लक में इतने रुपये अवश्य होंगे उसी में से दे दूँगा।'' वरुण बोला।

''तुम पूजा का सामान खरीदने गए थे या किसी की सहायता करने ?'' पार्वती ने डाँटना चाहा तो सोमेश ने टोंक दिया- ''अब बस करो पार्वती! यदि आज तुमने इसे इस उत्तम कार्य के लिए डाँट-फटकार लगाई तो फिर यह कभी किसी की सहायता नहीं करेगा।''

''लेकिन हमारा पूजा का क्या होगा जी ? मुहूर्त का समय निकल गया और पूजा का सामान तक नहीं आया।'' निराशापूर्वक पार्वती बोली।

''चिंता क्यों करती हो, असली लक्ष्मीपूजा तो यह पहले ही करके आ गया अब तो मिट्टी की प्रतिमा की परम्परा करना शेष है।'' सोमेश ने समझाया।

''ठीक है घर में थोड़े से फल रखे हैं उसी से पूजा कर लेते हैं।'' पार्वती बोली।

''हाँ भाई! भगवान तो भाव के भूखे होते हैं। पूजन-प्रसाद के नहीं।'' सोमेश ने कहा।

''चलो अब पूजा कर लो।'' पार्वती बोली।

वरुण को सिर नीचा किए देख सोमेश बोले- ''बेटे! तुमने तो ऐसा काम किया है कि हमारा सिर भी गर्व से ऊँचा हो गया। फिर तुम क्यों मुँह लटकाए खड़े हो ? चिंता मत करो हम सुबह अस्पताल चलेंगे और पैसे भरकर उस लड़की की छुट्टी भी करा देंगे।''

यह सुनते ही वरुण की जान में जान आई।

**- इन्दौर (म. प्र.)**

# प्यारे भैया

– रजनीकांत शुक्ल

स्वीटी ने अपनी माँ के गले में हाथ डाल दिए। ''क्या बात है आज बहुत प्यार आ रहा है माँ से!'' माँ ने स्वीटी को प्यार करते हुए कहा।

अभी-अभी स्वीटी के मित्र पास पड़ोस के बच्चे विदा हुए थे। आज उसके जन्मदिन का उत्सव था।

''बोलो, क्या कहना है?'' माँ ने प्यार से पूछा। ''मौसी की शादी में चलेंगे ना?'' स्वीटी ने माँ से प्रश्न कर दिया।

''हाँ, हाँ, अवश्य चलेंगे। क्यों नहीं चलेंगे। तुम्हारी मौसी तुम्हारे बिना शादी ही नहीं करेगी।'' स्वीटी की माँ ने हँसते हुए उत्तर दिया।

आप तो मेरी हँसी बना रही हो। स्वीटी नाराज होकर बोली।

मैं हँसी नहीं बना रही। अभी तो शादी में पूरे दो महीने बाकी हैं। आठ दिसम्बर को है। अभी बहुत समय बाकी है। माँ ने मुस्कुराते हुए कहा।

आज तो अभी तुमने अपना नौंवा जन्मदिन मनाया ही है। दो महीने बाद अपनी मौसी की शादी भी करवा लेना। माँ ने उसे गोद में लेते हुए कहा।

''ठीक है माँ! मुझे जाना अवश्य है मौसी की शादी में।'' स्वीटी ने लड़ियाते हुए कहा।

हाँ, हाँ, क्यों नहीं अवश्य जाएँगे हम। माँ ने भरोसा दिलाया।

यह उत्तर प्रदेश राज्य में कानपुर महानगर के यशोदा नगर मोहल्ले की बात थी। स्वीटी का घर यहीं था। सभी बच्चों की तरह उसे भी शादी के समारोह का बहुत उत्सव था।

आज उसे अपने नौवें जन्मदिन के उत्सव पर उसे अगले उत्सव की याद आ गई। जो दो महीने बाद कानपुर से दूर उत्तर प्रदेश के ही सुल्तानपुर जिले में उसके ननिहाल में होने वाली थी।

तब वह अपने ननिहाल में सभी लोगों से मिल सकेगी। ननिहाल में उसे सब प्यार भी तो बहुत करते थे। उसे अपनी पिछली बार की ननिहाल की यात्रा याद हो आई। वहाँ सब उसका कितना ध्यान रखते थे। माँ भी वहाँ उसे अधिक नहीं डाँट पाती। उसे डाँटने के चक्कर में उल्टे स्वयं उनकी ही डाँट पड़ जाती थी और मौसी वह तो उस पर जान छिड़कतीं थीं। जिसे याद करके वह मुस्कराने लगी। उसे याद आया कि कैसे सबने प्यार करके वहाँ से चलते समय उसे रुपए भी दिए थे।

अब उसे बेसब्री से आने वाली दिसम्बर की आठ तारीख की प्रतीक्षा थी। आखिरकार शादी के

कई दिन पहले स्वीटी अपने परिवार के साथ ननिहाल जा पहुँची। यहाँ तो अलग ही दुनिया में वह आ गई। एक तो नानी का घर और दूसरे शादी का घर। उसके तो मजे ही मजे हो गए थे।

वहाँ उसे प्यार करने वाले मामा–मामी, नाना–नानी, मौसी तो मिले ही साथ ही शादी के घर में आने वाले रिश्तेदारों की रेलपेल में उसका खूब जी लग गया। अपनी आयु के बच्चे तो थे ही उसके मामा का डेढ़ वर्ष का बेटा उसका भाई क्या मिला। उसे खेलने के लिए एक खिलौना मिल गया।

अब बस सारे दिन वह अपने उसी भाई के साथ खेलती रहती। फिर शादी वाला दिन भी आ गया। सब लोग अपने–अपने काम में लगे हुए थे। बड़े लोग जहाँ शादी की व्यवस्था बनाने में जुटे हुए थे वहीं बच्चे अपने खेलकूद में लगे थे।

स्वीटी तो बस अपने भाई को लिए सुबह से अपना और उसका मनबहलाव कर रही थी। सुबह से ही मामी घर के कामों में व्यस्त थीं। घर के आँगन में ही हलवाई लगे हुए थे। वही भट्टी सुलग रही थी। सुबह उस पर ही नाश्ता बना था।

अब इस समय उस पर कढ़ाई चढ़ाकर हलवाई ने मिठाई बनाने के लिए अस्सी किलो दूध खौलने के लिए रखा हुआ था। बच्चे जब एक दो बार उस ओर गए तो हलवाई ने उन्हें दूर जाकर खेलने के लिए कह दिया।

स्वीटी वहाँ से दूर जाकर बाहर गैलरी के पास अपने उसी भाई के साथ खेलने लगी। तभी वहाँ शादी की व्यवस्था को लेकर दो तीन बड़े लोगों में जोरदार बहस होने लगी। वह बहस अधिक बढ़ी तो स्वीटी ने वहाँ से उठना ही ठीक समझा।

उसने भाई को अपनी गोद में उठाया और वहाँ के शोरगुल लड़ाई झगड़े की जगह से हटकर अंदर के कमरे में लाने लगी। वहाँ तक जाने के बीच में आँगन पड़ता था जहाँ मिठाई बनाने के लिए हलवाई की भट्ठी पर दूध उबल रहा था।

हलवाई ने खौलते हुए दूध को भट्ठी से उतार कर अभी–अभी नीचे रखा था कि तभी स्वीटी भाई को लेकर उधर से निकली। वह तेजी से भाई को लेकर उधर से निकली तभी अचानक उसका पैर फिसल गया वह लड़खड़ाई और फिर वह हादसा हो गया।

उसके हाथ से छूटकर उसका भाई दूध की कढ़ाई में जा गिरा। सबके मुँह खुले के खुले रह गए। जिस समय वे सब भौचक्के से हुए थे तभी बिना जलने की परवाह किए स्वीटी ने तुरन्त खोलते हुए दूध में हाथ डाला और बच्चे को निकाल लिया।

जब तक लोग कुछ समझ पाते, पलक झपकते ही यह सब घटित हो गया। जब तक होश आया भाई

और स्वीटी पाण्डेय दोनों जलन और दर्द से तड़प रहे थे। आखिर वह खौलता हुआ दूध था।

शादी का कार्यक्रम तो जैसे–तैसे हुआ किन्तु सभी इन दोनों को लेकर तुरन्त अस्पताल की ओर भागे। कुछ ही देर में उनके सारे शरीर पर फफोले पड़ चुके थे।

अस्पताल में उनका उपचार किया गया लेकिन उनकी गम्भीर हालत को देखते हुए उन्हें राजधानी लखनऊ ले जाया गया।

बहुत प्रयत्नों के बाद भी उस भाई को नहीं बचाया जा सका। स्वीटी का शरीर भी चालीस प्रतिशत जली हालत में था। उसे बहुत कष्ट था। लगभग तीन महीने तक अस्पताल में रहने के बाद वह चलने–फिरने लायक हो सकी।

वह एक दुर्घटना थी किन्तु उसमें स्वीटी ने बिना अपनी जान की परवाह किए जिस तरह से अपने भाई को बचाने के लिए खौलते दूध में हाथ डालने की जो हिम्मत दिखाई वह प्रशंसनीय थी। यह अलग बात थी कि उसका प्यारा भाई इस दुर्घटना में न बच सका किन्तु स्वीटी ने अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

स्वीटी पाण्डेय की इस बहादुरी के कार्य को ब्यौरे के साथ वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया। उसे देश के प्रधानमंत्री जी के द्वारा वर्ष २००२ का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया।

**नन्हें मित्रो!**

**हो जाते हैं कभी–कभी हमसे ऐसे कुछ काम।**
**जिनसे हो जाता है, लोगों में अपना नाम।**
**रुकना नहीं वरन चलते ही रहना अपना काम।**
**लगातार हर बार हमें करना है ऊँचा नाम।।**

**– नई दिल्ली**


राष्ट्र धर्म

# राष्ट्रधर्म

मूल्य : ₹ १००

(मासिक)

नवम्बर-२०२१

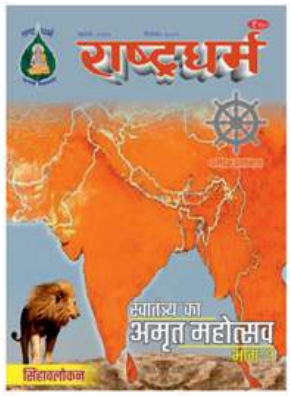


विशेषांक

दीपावली के शुभ अवसर पर प्रकाश्य

**सिंहावलोकन-**

**स्वातन्त्र्य का अमृत महोत्सव (भाग-1)**

राष्ट्रधर्म (मासिक) ने प्रत्येक वर्ष की भाँति विशेषांकों की उज्ज्वल परम्परा में इस वर्ष भी 'सिंहावलोकन'– 'स्वातन्त्र्य का अमृत महोत्सव विशेषांक भाग–१' को आगामी अंक (दीपावली के शुभ अवसर पर) प्रकाशित कर रहा है। यह विशेषांक स्वातन्त्र्य के अमृत महोत्सव की बेला में अतीत एवं सनातन संस्कृति की चिंतन–परंपरा को उत्कीर्ण करते हुए विदेशी आक्रांताओं की दमनकारी नीतियों के फलस्वरूप भारतीय सनातन चिंतन, ज्ञान–परंपरा एवं संस्कृति पर हुए आघात पर केंद्रित है। इस विशेषांक में स्वतंत्रता पूर्व भारत की गौरवशाली यात्रा के पदचिह्न और उसके कालजयी सातत्य की उपलब्धियों पर केन्द्रित किया गया है।

**विशेष**

1. अभिकर्त्ता बन्धु– अपनी सम्भावित बढ़ी हुई माँग कृपया 15 अक्तूबर, 2021 तक सूचित करने का कष्ट करें।
2. विज्ञापनदाता बन्धु– कृपया 15 अक्तूबर, 2021 तक अपना विज्ञापन देकर हार्दिक सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

**सम्पर्क**

प्रबन्धक राष्ट्रधर्म 'मासिक'
संस्कृति भवन राजेन्द्र नगर, लखनऊ–226004
दूरभाष : 0522–2691384
E-mail : mgr.rdm.1947@gmail.com, editor_rdm_1947@rediffmail.com

# व्यंग्य चित्र

– संकेत गोस्वामी

# होनहार बिरवान के होत चिकने पात

– डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम

संसार में अनेक महापुरुष हुए हैं, जिनने अल्पवय में ही अपनी अभूत–पूर्व प्रतिभा से सभी को चकित कर दिया। उनका जीवन हर पल हमें यह संदेश देता रहा है कि दृढ़ इच्छाशक्ति, परिश्रम और आत्मविश्वास के बल पर कठिन कार्य भी आसानी से पूर्ण किया जा सकता है। प्रतिभा जन्मजात होती है। ऐसे ही कुछ प्रतिभाशाली व्यक्तियों का परिचय प्रस्तुत हैं–

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित गुरुदेव **रवींद्रनाथ ठाकुर** ने १४ वर्ष की अवस्था में ही शेक्सपियर के 'मैकबेथ' नाटक का बांग्ला में अनुवाद किया था। ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता **महादेवी वर्मा** ने १० वर्ष की वय में कविता लिखी थी। **छत्रपति शिवाजी** ने १३ वर्ष में तोरण का किला जीत लिया था। भारत कोकिला के नाम से प्रसिद्ध **सरोजिनी नायडू** ने १३ वर्ष में १३ सौ पंक्तियों की एक अंग्रेजी कविता लिखी।

**'ब्रेल लिपि'** के आविष्कारक **ग्राहम ब्रेल** ने १५ वर्ष की आयु में इसका आविष्कार किया। स्काटलैंड के **जेम्स क्रिस्टल** ने १२ वर्ष की आयु में ही स्पेनिश, अरबी, यहूदी और ग्रीक आदि १२ भाषाएँ सीखी थीं। फ्रांस के **ह्वेलस पास्कल** ने १२ वर्ष की आयु में ध्वनि शास्त्र पर निबंध लिखकर अपनी प्रतिभा साबित की।

**अलबर्ट आइंस्टीन** ने १६ वर्ष की आयु में सापेक्षता पर लेख लिखा। फ्रांस की आजादी में महती भूमिका निभाने वाली **जॉन ऑफ आर्क** ने १६ वर्ष की आयु में युद्ध में भाग लिया और १९ वर्ष की आयु पूर्ण करते–करते जिंदा जला दी गई। प्रसिद्ध क्रांतिकारी नाना साहब पेशवा की दत्तक पुत्री **मैना** ने १३ वर्ष की अवस्था में ही अपने प्राण देश पर न्यौछावर कर दिए थे। ऐसे अनेक क्रांतिकारी बच्चे स्वतंत्रता के आन्दोलन में भारत माता पर अपने प्राण लुटा गए। आज भी प्रतिवर्ष भारत के राष्ट्रपति जी छोटी अवस्था में असाधारण साहस व वीरता के लिए गणतंत्र दिवस पर बहादुर बच्चों को सम्मानित करते हैं।

**फ्रेंकोइसे आगेस्टो** पेरिस की रायल लायब्रेरी के सर्वोच्च अधिकारी तब नियुक्त हुए जब वे १२ वर्ष के थे। केन्टुकी नगर के **मार्टिन स्पेल्डिंग** १४ वर्ष की आयु में प्रोफेसर बन गए थे, साथ ही एक कॉलेज के विद्यार्थी भी थे।

विश्वविख्यात मनोवैज्ञानिक **सिगमंड फ्रायड** ने १९ वर्ष की आयु में मनोविज्ञान का ढांचा प्रस्तुत कर सबको आश्चर्य में डाल दिया था। **संत ज्ञानेश्वर** ने १५ वर्ष की वय में प्रख्यात पुस्तक **ज्ञानेश्वरी** लिख दी थी।

कपास ओटने की मशीन के आविष्कारक **ऐली व्हिटनी** ने २८ वर्ष की वय में इस मशीन का आविष्कार किया था। रिवाल्वर के आविष्कारक **सैमुअल कोल्ट** ने १६ वर्ष में ही रिवाल्वर का लकड़ी का मॉडल बना लिया था। बाद में उन्होंने इसे धातु का बनाया। २१ वर्ष की आयु में उन्होंने आधुनिक रिवाल्वर तैयार कर ली।

भारतीय इतिहास में **लव, कुश, ध्रुव, प्रह्लाद, कबीर, विवेकानंद, शंकाराचार्य** और **रामतीर्थ** आदि ने अल्प वय में ही अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दे दिया था।

– कानपुर नगर (उ. प्र.)

# मिठाइयों के मीठे बोल

– जान्हवी सोलट,
इन्दौर (म. प्र.)

**जलेबी**

आकार मायने नहीं रखता,
स्वभाव मायने रखता है,
जीवन में उलझनें कितनी भी हों,
**'रसीले और मधुर रहो'**

**रसगुल्ला**

कोई फर्क नहीं पड़ता कि,
जीवन आपको कितना निचोड़ता है,
**'अपना असली रूप सदा बनाये रखें'**

**बूंदी के लड्डू**

बूंदी–बूंदी से लड्डू बनता,
छोटे–छोटे प्रयास से ही सब कुछ होता हैं!
**'सकारात्मक प्रयास करते रहें'**

**सोहन पापड़ी**

हर कोई आपको पसंद नहीं कर सकता,
लेकिन बनाने वाले ने कभी हिम्मत नहीं हारी।
**'अपने लक्ष्य पर टिके रहो'**

**काजू कतली**

अपने आप को इतना सस्ता ना रखें,
की राह चलता कोई भी आपका दाम पूछता रहे!
**'आंतरिक गुणवत्ता हमें सबसे अलग बनाती है'**

**गुलाब जामुन**

नम्र होना कमजोरी नहीं है।
यह आपकी विशेषता भी है।
**'नम्रता यह एक विशेष गुण है'**

**बेसन के लड्डू**

यदि दबाव में बिखर भी जाए तो,
फिर से बंधकर लड्डू हुआ जा सकता है।
**'परिवार में एकता बनाए रखें'**

# दीवाली पर दादी का प्रण

– डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

कल दीवाली का त्यौहार था। लेकिन कोरोना के कहर और प्रदूषण के कारण हवा को बहुत अधिक जहरीला होने से बचाने के लिए केवल पर्यावरण हितैषी पटाखों की छूट दी गई थी। शिवम् को आज पिताजी के साथ पर्यावरण हितैषी पटाखे खरीदने बाजार जाना था।

अभी वह टी. वी. देखते हुए दीवाली पर पटाखों और दीपकों, झालरों की रोशनी के बारे में सोच ही रहा था, अचानक माँ ने उसे आवाज देकर कहा– ''बेटा! शिवम् तनिक पास वाली दुकान से बिस्कुट के पैकेट तो ले आओ। देखो मॉस्क लगाकर जाना।''

आवाज सुनकर शिवम् देखना छोड़कर, माँ से पैसे लेकर और मुँह पर मॉस्क लगाकर पास वाली दुकान से बिस्कुट के पैकेट लेने चल पड़ा।

दरवाजे के पास आकर उसने देखा कि दरवाजा खुला हुआ है। बाहर दादी गाय को कुछ खिला रही है। वह बिस्कुट के पैकेट खरीदकर जैसे ही वापस घर के दरवाजे के पास आया, उसने देखा कि गाय को दादी ने जिस पॉलीथीन में रखकर कुछ खिलाया था, गाय ने उसे पॉलीथीन सहित खा लिया है। यह देखकर शिवम्

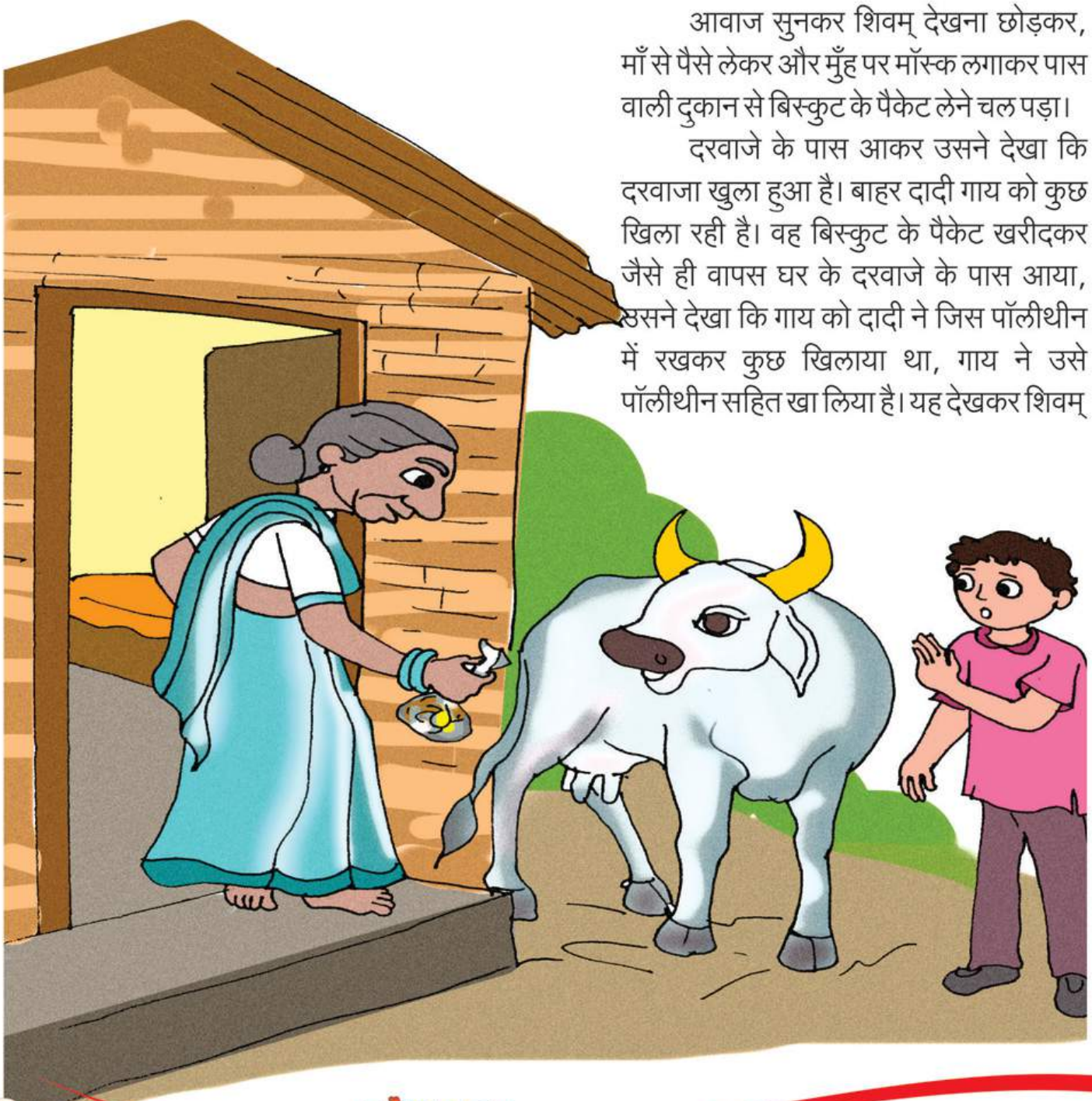

जोर से चिल्लाकर बोला– ''यह आपने क्या कर दिया दादी? गाय को पॉलीथीन भी खिला दी? मेरे शिक्षक कहते हैं कि पॉलीथीन जानवरों के लिए बहुत ही हानिकारक होती है। यह उनकी आँतों में फँस जाती है। इससे जानवरों की मृत्यु तक हो सकती है।''

उसकी बात सुनकर दादी सन्न रह गईं। यह बात तो उन्होंने कभी सोची ही नहीं थी। कुछ क्षण चुप रहने के बाद उन्होंने अपने मन की शंका प्रकट करते हुए कहा– ''पॉलीथीन तो हर घर में कूड़े में फेंकी जाती है। कूड़े में तो गाय ही नहीं, बल्कि अन्य जानवर भी कुछ न कुछ खाते रहते हैं। फिर सभी जानवर तो मर नहीं जाते?''

अभी शिवम् कुछ कहने ही वाला था, कि पिताजी उन दोनों की वार्ता सुनकर दरवाजे पर आ गए। उन्होंने दादी से कहा– ''अन्य जानवर भी मर सकते हैं, और जो जानवर मरता है, उसकी मृत्यु का कारण हम लोग कुछ और ही सोच लेते हैं। पॉलीथीन की ओर तो किसी का ध्यान जाता ही नहीं। शिवम् ठीक कह रहा है माँ! वास्तव में पॉलीथीन, जानवरों की मृत्यु का कारण तो है ही, साथ ही यह नालियों में फँसकर नालियाँ जाम कर देती हैं। इस कारण मच्छर और अन्य हानिकारक कीड़े पैदा होकर अनेक बीमारियाँ फैलाते हैं।''

पिताजी की बातें दादी को समझ में आ रही थीं। उन्होंने अपनी आँखें बंद करके हाथ जोड़कर कहा– ''हे भगवान! मैं तो अनजाने में ही जानवरों को जहर खिला रही थी। मेरी भूल को क्षमा करना प्रभु। आगे से अभी से मैं यह प्रण करती हूँ कि अब मैं पॉलीथीन को हाथ तक नहीं लगाऊँगी।''

''और मैं भी यह प्रण करता हूँ माँ! कि अब आगे से बाजार से कोई भी सामान पॉलीथीन में लेकर नहीं आऊँगी।'' पिताजी ने भी अपने हाथ जोड़ते हुए कहा।

पिताजी की बात सुनकर शिवम् को लगा, जैसे उसने दादी का मन बदलकर, इस दीवाली पर वास्तव में बहुत बड़ी विजय प्राप्त कर ली हो। आज का दिन उसके लिए ही नहीं, वरन दादी और पिताजी के लिए भी यादगार दिन बन गया था।

**– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)**

शिशु गीत

# काठ का घोड़ा

**– डॉ. हरिवंशराय बच्चन**

२७ नवम्बर स्व. श्री. हरिवंशराय बच्चन जी का जन्म दिवस होता है। १८ जनवरी २००३ को वे प्रत्यक्ष रूप से हमारे बीच नहीं रहे पर उनकी रचनाएँ आज भी अमर हैं। **–सम्पादक**

**काठ का घोड़ा, काठ की जीन।**
**उस पर बैठे, लंगड़ दीन।।**
**कोड़ा खूब चलाते हैं, रह रह एड़ लगाते हैं।**
**कहीं न आते–जाते हैं, झूमझूम रह जाते हैं।।**

**– मुंबई (महाराष्ट्र)**

# हम हैं सच्चे हिन्दुस्थानी

– डॉ. अशोक कुमार गुप्त 'अशोक'

हम सब नन्हें मुन्ने बच्चे।
तन के सुंदर मन के सच्चे।
कभी नहीं करते मनमानी।
हम हैं सच्चे हिन्दुस्थानी।।

जाति–धर्म से हम अनेक हैं।
शत्रु सताए, हम एक हैं।
दुश्मन माँगे क्षण में पानी।
हम हैं सच्चे हिन्दुस्थानी।।

भारत माँ की शुभ्र आस हैं।
लाल–बाल–गौतम–सुभाष हैं।
देशधर्म की कहें कहानी।
हम हैं सच्चे हिन्दुस्थानी।।

प्रेम एकता की मिसाल हैं।
गद्दारों हित महाकाल हैं।
योगी–पंडित–ज्ञानी–ध्यानी।
हम हैं सच्चे हिन्दुस्थानी।।

हम 'अशोक' हैं सदा रहेंगे।
गौरव गाथा कहा करेंगे।
कभी न झूठी बात बनानी।
हम हैं सच्चे हिन्दुस्थानी।।

– कानपुर (म. प्र.)

# बच्चे

– पं. गिरि मोहन गुरु

देश के अरमान हैं बच्चे। भारती की शान है बच्चे।।
इन्हीं से हर ओर सुन्दरता। फूल की मुस्कान है बच्चे।।
पीढ़ियों के प्रथम परिचायक। मनुजता के गान हैं बच्चे।।
एक भोलापन लिए चेहरे। खुशी की पहचान हैं बच्चे।।

– होशंगाबाद (म. प्र.)

## आपकी कविता

*बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'बच्चे' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।*

.....
.....
.....
.....
.....
.....

# बच्चे अजब गजब

– अंजनी शर्मा

हम बच्चे हैं अजब–गजब।
काम हमारे अजब–गजब।।
दिनभर करते रहते खटपट।
दौड़ें–भागें सरपट–सरपट।।
हल्ला–गुल्ला, धूम–धड़ाका।
खूब लगाते चौका–छक्का।।
इक–दूजे को देते धक्का।
कर दें सबको हक्का–बक्का।।
राजू पेड़ पर बैठा लटका।
पप्पू झाड़ी में जा अटका।।
मुन्नू ने चुन्नू को पटका।
माँ ने फिर डाँटा फटका।।
दिन भर खेलें, थकें नहीं हम।
सब कामों में आगे हरदम।।

– इन्दौर (म. प्र.)

# बड़ी खुशी

– हरिन्दर सिंह गोगना

रवि ने पिछली दीपावली पर जिद से पिताजी से बड़े पटाखे मंगवा लिए थे और वही हुआ जिस का डर था। एक बड़ा बम फोड़ते हुए रवि का दाहिना हाथ घायल हो गया था। अब वह उस घटना को भुला कर फिर बड़ी आवाज वाले पटाखों की माँग कर रहा था। जिस पर उसके पिताजी ने साफ आपत्ति जताते हुए कहा कि यदि वह जिद नहीं छोड़ेगा तो उसे लघु पटाखे भी नहीं मिलेंगे।

रवि उस समय तो मन मारकर रह गया किन्तु जब उसके पड़ोस में रहने वाले अंकुर और हरि ने उसे बताया कि उनके पिता ने उन्हें दो सौ के नोट पटाखों के लिए दिए हैं और वह अपनी इच्छा के पटाखे खरीदने चले हैं तो रवि को जैसे उनके कुछ चिढ़ हुई और वह उदास सा होकर घर आ गया।

शाम को उसके पिताजी कार्यालय से आए तो उन्होंने अपनी पैंट खूँटी पर टाँगी और पायजामा पहन कर घर की छत पर टहलने के लिए चले गए। तब रवि उनके कमरे में आया और खूँटी पर लटकी पैंट की जेब में अपना हाथ डाला। उसका विचार पिताजी के बटुए से पाँच सौ रुपये चुराने का था ताकि उनके मन पसंद पटाखे लेकर अपने मित्रों को चिढ़ा सके और उन्हें फोड़कर मस्ती कर सके। लेकिन अचानक ही अपने पिताजी को कमरे में आते देख रवि ने अपना हाथ उनकी पैंट की जेब से निकाल लिया।

''रवि.. .यहाँ क्या कर रहे हो?'' उसके पिताजी ने पूछा।

''जी कुछ नहीं.. कुछ भी तो नहीं।'' घबराहट में रवि बोला और फिर बाहर दौड़ गया। उसके पिताजी थोड़ी देर बाद फिर घर की छत पर चले गए।

रवि ने पिताजी को सीढ़ियाँ चढ़ते देखता तो अवसर पाकर जल्दी से उनके कमरे में गया और काँपते हाथों से उनकी पैंट की जेब से बटुआ निकाला और उसमें से एक पाँच सौ रुपये का नोट निकाल कर अपनी जेब में डाल लिया। फिर अपने कमरे में आकर पढ़ने का ढोंग करने लगा। ताकि किसी को उसकी हरकत पर शक न हो। उसने सोचा कल वह समीप वाली दुकान से मनचाहे पटाखे ले आएगा।

अगली सुबह जब रवि सो रहा था तो उसे किसी ने जगाया। देखा तो उसके पिताजी उसके पास बैठे उसे टकटकी लगाकर देख रहे थे। रवि उठकर बैठ गया और बोला– ''शुभ दीपावली पिताजी!''

''शुभ दीपावली बेटा! किन्तु आज दीपावली पर मैं प्रसन्न नहीं....।''

''क्यों पिताजी?'' रवि को पिता की बात सुनकर आश्चर्य हुआ। ''तुमने अपने पिता की जेब से

पैसे चोरी करना जो सीख लिया है।'' रवि को जैसे बिजली का झटका लगा था। वह समझ गया कि उसकी चोरी पिताजी ने पकड़ ली है। फिर भी वह अनजान सा बनते हुए बोला– ''मैं समझा नहीं पिताजी?''

''कल जब तुम मेरे कमरे में मेरी पैंट के पास खड़े थे तभी मुझे तुम पर कुछ शक हुआ। मुझे संदेह हुआ कि कहीं तुम्हारा विचार चोरी करने का तो नहीं था। मैंने सोचा यदि तुम्हारा विचार चोरी का हुआ तो तुम फिर प्रयत्न करोगे और मेरा अनुमान सही निकला। मैं जानबूझकर दोबारा छत पर गया ताकि तुम्हारा विचार क्या है पता लग सके। यदि मैं यह न करता तो तुम कोई और अवसर पाकर चोरी करते। मैं तुम्हें इसी अवसर पर पकड़ना चाहता था ताकि तुम्हें भटकने से बचा सकूँ। आज जब तुम सो रहे थे तो मैंने सबसे पहले तुम्हारी जेब देखी जिसमें से मुझे यह पाँच सौ रुपये का नोट मिला।''

रवि के पास अब कोई सफाई नहीं थी। वह शर्मिंदा सा पिता के सामने किसी अपराधी की तरह सिर झुकाए बैठा था। वह सोच रहा था कि उसके पिता उसकी हर इच्छा पूरी करने का प्रयत्न करते हैं यदि उसे पटाखों के लिए मना किया तो उसकी भलाई के लिए ही न। ऐसे में अपनी मनमानी करने के लिए उसे चोरी नहीं करनी चाहिए थी। जिससे न केवल उसके पिताजी का दिल दुखा बल्कि पिता की दृष्टि में भी उसका विश्वास कम हुआ। रवि ने पिता से दिल से वादा किया कि उसकी भूल को क्षमा कर दें पुन: वह कभी ऐसा अपराध नहीं करेगा। पिता को रवि की यह विशेषता पता थी कि जब वह कोई प्रतिज्ञा करता है तो दिल से करता है। उन्होंने रवि को सीने से लगा लिया। दीपावली की रात रवि ने पिताजी के दिलाए हुए पटाखे ही फोड़े। पिता के दिलाए हुए छोटे–छोटे पटाखे उसे बड़ी प्रसन्नता दे रहे थे।

**– पटियाला (पंजाब)**

# राष्ट्र से बड़ा कोई नहीं

– साँवलाराम नामा

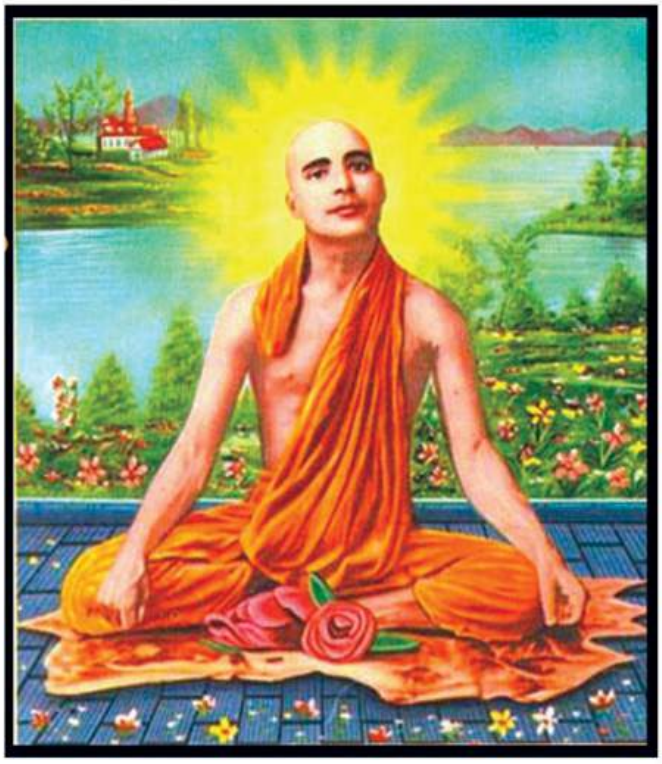

एक बार स्वामी रामतीर्थ जापान गए। वहाँ उनका अत्यन्त आदर सत्कार हुआ। इस दौरान उन्हें एक विद्यालय में निमन्त्रित किया गया। विद्यालय के दौरान क्या सोचकर स्वामी रामतीर्थ ने एक नन्हें विद्यार्थी से पूछा– ''तुम किस धर्म को मानते हो?'' विद्यार्थी ने उत्तर दिया– ''बौद्ध धर्म।'' स्वामीजी ने फिर प्रश्न किया– ''महात्मा बुद्ध के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं?'' विद्यार्थी ने झट से उत्तर दिया– ''बुद्ध भगवान हैं।'' यह कहकर उसने मन ही मन बुद्ध का श्रद्धा से ध्यान कर अपने देश की प्रथा के अनुसार बुद्ध को झुककर प्रणाम किया।

तब स्वामीजी ने उस विद्यार्थी से पूछा– ''तुम कनफ्यूशियस के बारे में क्या कहोगे?'' विद्यार्थी ने श्रद्धाभाव से सच्चे शुद्ध मन से कहा– ''वे एक महान संत थे।'' उसने बुद्ध की तरह कनफ्यूशियस का ध्यान कर उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया।

स्वामी रामतीर्थ मुस्कुराकर बोले– ''मान लो, यदि कोई देश तुम्हारे देश जापान पर आक्रमण करता है और उसके मुख्य सेनापति बुद्ध अथवा कनफ्यूशियस हों तो तुम क्या करोगे?''

स्वामी रामतीर्थ का कहना था कि विद्यार्थी का चेहरा तत्काल तमतमाया क्रोध और जोश के मिले जुले भाव से तिलमिला उठा और बिजली–सा कड़क कर बोला– ''मैं ईंट का जवाब पत्थर से देते हुए लड़ूँगा, डरूँगा नहीं, दबूँगा नहीं तथा उन्हें जीतकर कठोर दण्ड दूँगा।''

स्वामीजी विद्यार्थी के साहस, वीरता पूर्वक दिए उत्तरों से अत्यन्त ही प्रसन्न हुए। उस बालक को उठाकर गले से लगाया, मुखमंडल चूमा और पीठ थपथपाते हुए बोले– ''शाबाश! शाबाश! जिस देश के रक्षक तुम जैसे बहादुर बालक हो, उस देश का कोई दुश्मन कैसा भी हो, बाल बांका नहीं कर सकता।

ओ बहादुर! देशभक्त बालक में तुम्हारी सच्चाई देशप्रेम से अत्यधिक प्रसन्न हूँ। धन्य है जापान जहाँ तुम जैसे देश प्रेमी दुलारे बालक पैदा हुए हैं। तुम्हारी पवित्र भावना यह प्रकट करती है कि, देश ही सर्वस्व है, राष्ट्र से बड़ा कोई नहीं है।''

– भीनमाल (राजस्थान)

**श्री. गुरुनानक जयंती : कार्तिक पूर्णिमा**

**सादर नमन!**

**नानक नाम जहाज है चढ़े सो उतरे पार**

# फटाफट सर!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

# पुस्तक परिचय

श्रीमती जयश्री श्रीवास्तव 'जया मोहन' बाल साहित्य जगत में प्रयागराज की पावन धरती से एक सुपरिचित हस्ताक्षर है। कहानी एवं कविता दोनों विधाओं में आपकी लेखनी निरंतर सुन्दर-सुन्दर रचनाओं से बालसाहित्य का भण्डार भर रहीं है 'रवीना प्रकाशन, सी-३१६ स्ट्रीट नं.११, गंगा विहार, दिल्ली-११००९४ से प्रकाशित आपकी कृतियाँ हैं-




## नाचे मोर

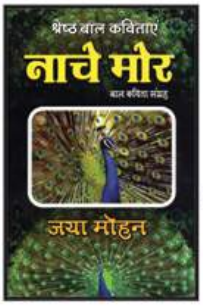

यह २० सुमधुर रोचक बाल कविताओं का संग्रह है जिसे रेखाचित्र और भी जीवंत बनाते हैं।

मूल्य १५०/-

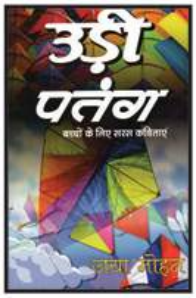




## उड़ी पतंग

यह भी १८ रोचक बाल कहानियों का रेखाचित्रों से श्रृंगारित बाल काव्य संग्रह है।

मूल्य १५०/-

## महकते फूल

इस बाल कविता संग्रह में १९ सुरुचिपूर्ण सरस एवं रेखाचित्रों से सज्रित बाल कविताएँ हैं।

मूल्य १५०/-

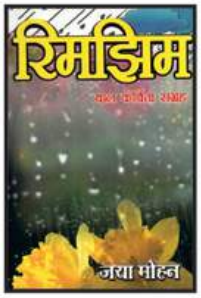




## रिमझिम

यह १९ मनोरंजन और बाल मनोविज्ञान से भरपूर बाल कविताओं का संकलन है।

मूल्य १५०/-

## बिरजू की बंसी

यह एक हिम्मती, लगनशील एवं बुद्धिमानी से समस्याओं का समाधान खोजने वाले बच्चे पर है बाल मन की सूक्ष्म रेखाएँ उकेरता बाल उपन्यास है।

मूल्य ९९/-

## टिमटिम तारे

बाल कविताएँ सुरूचिपूर्ण ढंग से बालमन में मनोरंजन के साथ जिज्ञासा समाधान करती है। ऐसी ही २१ बाल कविताएँ पाएँगे आप इस पुस्तक में।

मूल्य १५०/-

प्रस्तुति- **संकेत**

# सरल विज्ञान

*तुम्हें ये जानकर आश्चर्य हो सकता है लेकिन*
*हमारी ऊंचाई दिन भर में बदल जाती है..*
*खुद आजमाना है?*
*सुबह नींद से उठते ही अपनी ऊंचाई पूरी सावधानी से नापो..*
*या किसी की मदद लो ताकि नाप एकदम सही हो...*
*अब दोपहर बाद फिर अपनी ऊंचाई पूरी सावधानी से नापो..देखा अंतर है?*
*मजेदार है यह जानना कि ---*
*-तुम कितनी देर में कितना सिकुड़ गए यानी छोटे हो गए..*
*-क्या लम्बे लोग दिन भर में ज्यादा सिकुड़ते हैं?*
*-क्या बूढ़े और छोटे बच्चों के बारे में सिकुड़ना अलग या ज्यादा-कम होता है?*

वजह जान लो कि तुम्हारी रीढ़ की हड्डी का एक-एक अंश मजबूत और लचीला होता है और हर हिस्सा गद्दी की तरह दबाव देता हुआ एक दूसरे हिस्से पर सैंडविच की तरह रखा रहता है. इन डिस्क के बीच में एक द्रव्य भरा होता जो खड़े होने पर निचुड़ जाता है, जो रात को आराम की नींद लेने से इनके बीच इकट्ठा हो गया था. बस इसी वजह से तुम दिन में जरा से सिकुड़ जाते हो.

# नायक नर बहादुर थापा

वीरता एवं साहस के लिए गोरखाओं की छवि बहुत श्रेष्ठ है। यह परिचय प्राय: इनके नामों से भी प्रकट होता रहता है। नरबहादुर थापा भी ऐसे ही 'यथा नाम तथा गुण' के धनी वीर थे। पिता श्री जंगबहादुर जी थापा के यहाँ नेपाल में मार्च १९२१ में इनका जन्म हुआ और बीस वर्ष के होते-होते तो वे भारतीय सेना में भर्ती भी हो चुके थे। ११ नवम्बर १९४० का वह शुभ दिन था जब वे सेना में आए और आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त कर ५/५ गोरखा राइफल्स के अंग बन गए।

ऑपरेशन पोलो के लिए हैदराबाद में पुलिस कार्यवाही में यह गोरखा राइफल्स माइकॉल फोर्स का हिस्सा बन दक्षिणी क्षेत्र में तैनात हुई। योजना को सफल बनाने हेतु तुंगभद्रा रेल्वेपुल, हैदराबाद को कब्जे में लेना महत्वपूर्ण था। नरबहादुर थापा की बटालियन की 'ए' कंपनी इस हेतु निर्देशित थी। वह १३ सितम्बर १९४८ की ठण्डी रात थी जब रात्रि २ बजे गुटंकुल से यह टुकड़ी भौर होने के पूर्व ही पुल तक जा पहुँची।

दुश्मन ने बड़ी संख्या में दो मोर्चों से गोली वर्षा कर दूसरी प्लाटून का पथ रोक लिया। कहते हैं विपत्ति के समय ही वीरता की परीक्षा होती है। दो ओर तड़ातड़ बरसती गोलियों के बीच १०० गज के खुले मैदान में यह नरकेसरी दौड़ पड़ा। नरबहादुर की खुखरी की व्यास मिटी मशीनगन पोष्ट पर जमी ब्रेनगन क्रू को यमलोक पहुँचाकर।

इतना अवसर पर्याप्त हुआ। उनकी सैन्य टुकड़ी ने आगे बढ़कर पुल पर अधिकार कर लिया। साहस की जीवंत प्रतिमा बनकर गोलियों की बौछारों में नरबहादुर ऐसे निर्भय बढ़े थे मानो कोई बच्चा बरसात में नहाने को आँगन में कूद पड़े। उनके इस अदम्य साहस प्रदर्शन के लिए नायक नरबहादुर थापा १९५२ में **'अशोकचक्र'** से सम्मानित किए गए।

-

## वे रहते हैं सदा निरोग

– डॉ. दिनेश पाठक 'शशि'

खिल-खिलाकर, हँसते जो,
क्रोध कभी ना, करते जो।
सोते-जगते, सही समय पर,
वे रहते हैं, सदा निरोग।।
बुद्धि वर्द्धक, ब्राह्ममुहूर्त।
शीतल बहती, मंद समीर।
करते सेवन, उसका जो,
वे रहते हैं, सदा निरोग।।

– मथुरा (उ. प्र.)

# हम बच्चे

– सूर्यकुमार पांडेय

कभी नहीं डरते आँधी से,
हम बच्चे तूफान हैं।

सीना ताने, बढ़ते जाते,
अपनी मंजिल गढ़ते जाते।
कोई भी मुश्किल आ जाए,
साहस भरकर लड़ते जाते।।

हर आफत हमसे घबराती,
हम इतने बलवान हैं।

हम बादल से दयावान हैं,
हम ऊँचे पर्वत जैसे।
इतनी विनयशीलता हममें,
विंध्याचल है नत जैसे।।

तेज हवा में भी हँसते हम,
फूलों की मुस्कान हैं।

तितली जैसे रंग-बिरंगे,
भौरों-सा गुन-गुन करते।
इस धरती की फुलवारी में,
हम अपनी खुशियाँ भरते।।

झूठ नहीं छू सकता हमको,
सच्चाई की आन हैं।

– लखनऊ (उ. प्र.)

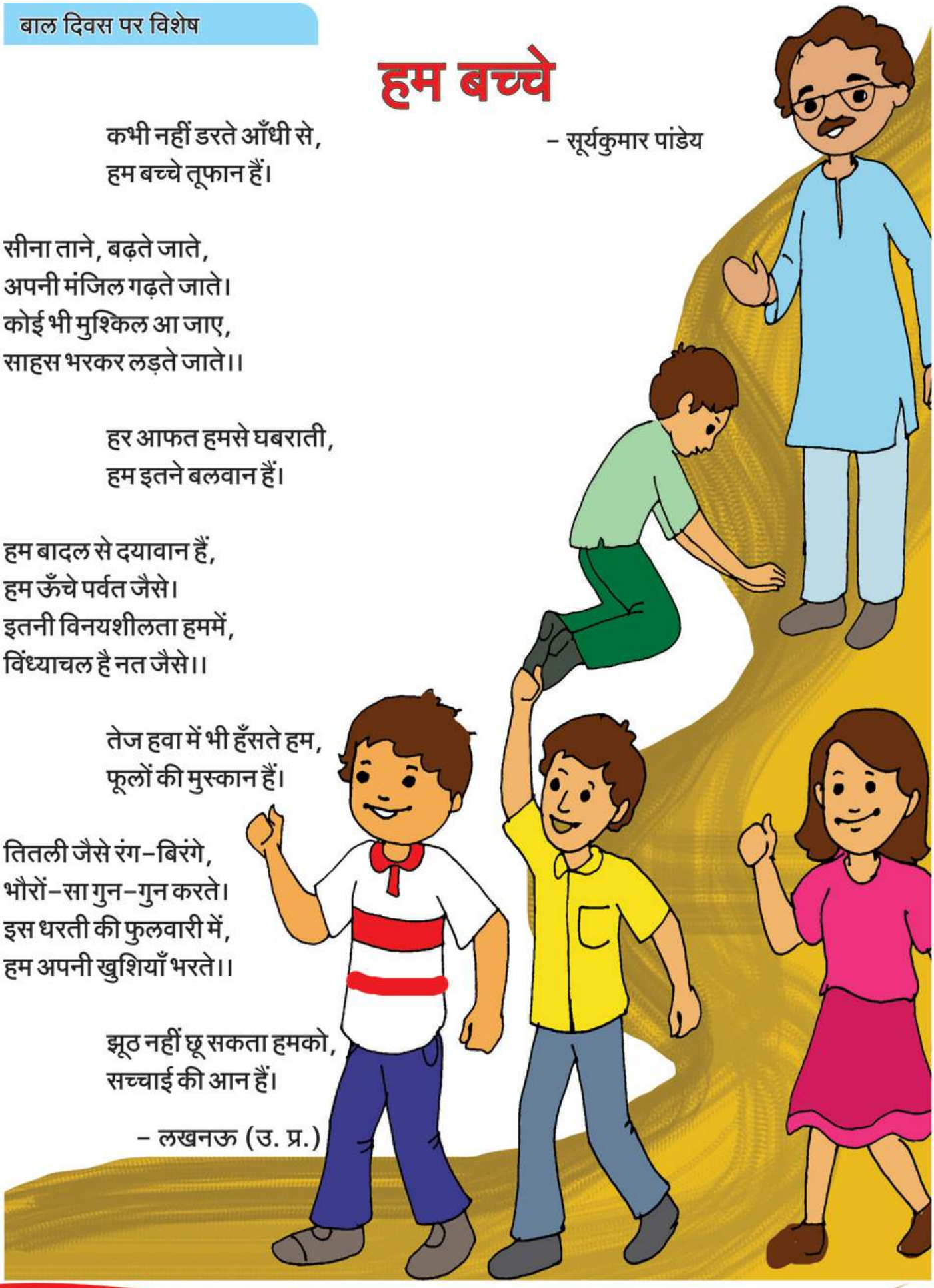

# छः अंगुल मुस्कान

वर्मा जी बस में यात्रा कर रहे थे। उनके साथ बैठी महिला की गोदी में बच्चा लॉलीपाप चूसता और श्रीमान वर्मा के कोट पर मल देता। वर्मा जी ने कहा– ''बहन जी! देखिए आपका बच्चा क्या कर रहा है?'' औरत ने बच्चे को डाँटा, ''बेटा! ऐसा नहीं करते। लॉलीपाप खराब हो जाएगी।''

*****

रेल यात्रा के समय दो यात्री काफी देर से एक–दूसरे से बातचीत करने के बारे में सोच रहे थे। पर बातचीत की शुरूआत कैसे की जाए, यही सोचकर दोनों परेशान हो रहे थे।

काफी सोच–विचार के बाद यात्री ने दूसरे से पूछा– ''क्या आप इसी रेल में यात्रा कर रहे हैं?''

''जी हाँ, जी हाँ।'' दूसरे यात्री ने प्रसन्न होकर कहा– ''लगता है आप भी इसी रेल में यात्रा कर रहे हैं।''

*****

बच्चा– ''पिताजी! क्या आपका बचपन का कोई सपना पूरा हुआ है?''

पिताजी– ''हाँ, बचपन में मेरी माँ मेरे बाल बहुत खींचती थी तब मुझे लगता था कि काश में गंजा होता।''

*****

ग्राहक– ''क्या मैं इस पैराशूट पर भरोसा कर सकता हूँ?''

दुकानदार– ''चिंता मत कीजिए भाई साहब! आप कभी भी इसे बदलवा सकते हैं।''

# आपकी पाती

आदरणीय
सम्पादक महोदय,
सादर अभिवादन!

महोदय देवपुत्र पत्रिका निरंतर बच्चों के बीच लोकप्रियता की पायदान पर आगे बढ़ती जा रही है। इसमें प्रकाशित सामग्री बच्चों का मनोरंजन एवं ज्ञान वर्द्धन करने में सहायक होती हैं।

**– अनिल अग्रवाल, भोपाल (म. प्र.)**

# भूल भुलैया

**– चाँद मो. घोसी**

**– नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी, (राज.)**

कविता

# आओ दीपावली मनाएँ

– अरविन्द कुमार 'साहू'

घर–घर में खुशियाँ फैलाएँ,
आओ दीपावली मनाएँ।
सारी दुनिया जगमग कर दें,
घर–आँगन में खुशियाँ भर दें,
सब मिल जुल कर दीप जलाएँ,
आओ दीपावली मनाएँ।
सुन्दर मीठे अजब खिलौने,
पकवानों के हैं क्या कहने,
बैठो खील पतासे खाएँ,
आओ दीपावली मनाएँ।
धूम–धड़ाका चारों ओर,
मचा पटाखों का है शोर,
चलकर फुलझड़ियाँ बिखराएँ,
आओ दीपावली मनाएँ।
लक्ष्मी और गणेश की पूजा,
शुभ और लाभ का देव न दूजा,
जीवन अपना सुखी बनाये,
आओ दीपावली मनाएँ।।

– रायबरेली (उ. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/१०/२०२१ | प्रेषण तिथि ३०/१०/२०२१ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

# संस्कार संजोना अच्छी बात है
# संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

पन्द्रहवर्षीय
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
**देवपुत्र** सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

## स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब ***Jio Net*** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना